



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

प्रहरी

वर्ष : 30

अंक : 64 वाँ

संयुक्तांक (अक्टूबर, 2019 – सितम्बर, 2020)

64^{वाँ}
अंक

फणीश्वरनाथ रेणु

— जन्म शताब्दी वर्ष —

4 मार्च 1921 – 11 अप्रैल 1977

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना का कार्यालय

प्रहरी परिवार



श्री प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



डॉ. काव्यदीप जोशी
उपमहालेखाकार



श्री आदर्श अग्रवाल
उपमहालेखाकार



श्री शिव शंकर
उपमहालेखाकार



श्री राकेश कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री विकास कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री मनोज कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री विनय कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री सुजीत कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री राजू कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री अरुण कुमार
वरिष्ठ अनुवादक



श्री मनीष कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक



मो. दानिश
कनिष्ठ अनुवादक



श्री वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक



प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

चौशठवाँ शंक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन,
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना – 800 001

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

चौसठवाँ अंक

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना ।

प्रकाशन : **प्रहरी**

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं । उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना का कार्यालय

आवरण पृष्ठ : यशस्वी उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु, जिनकी जन्म शताब्दी है इस वर्ष। विशेष लेख पृष्ठ 14 पर

साज-सज्जा : मार्कमैन मीडिया एण्ड पब्लिकेशन

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की निरंतर सेवा

मुद्रक : मार्कमैन मीडिया एण्ड पब्लिकेशन

पटना - 800 016

दूरभाष - 7004875456, 9334368987

ई-मेल- marcmanamit@gmail.com

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

चौसठवाँ अंक

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकर (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

परामर्शी

डॉ० काव्यदीप जोशी	उपमहालेखाकार
श्री आदर्श अग्रवाल	उपमहालेखाकार
श्री शिव शंकर	उपमहालेखाकार
श्री राकेश कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विकास कुमार नं. 1	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विनय कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सुजीत कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं०-1 (संपादक)	श्री मनीष कुमार महतो
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी	कनिष्ठ अनुवादक
श्री राजू कुमार सिंह	मो० दानिश
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी	कनिष्ठ अनुवादक
श्री अरूण कुमार	श्री वीरेन्द्र साहू
वरिष्ठ अनुवादक	कनिष्ठ अनुवादक

इश अंक में

क्रम	रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	कबीर साहब के विचारों की वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता	लेख	विकास कुमार नं. 1	6
2.	महात्मा गाँधी के एकादश व्रत	लेख	वीरेन्द्र साहू	9
3.	इच्छा शक्ति को जाग्रत करने की कला है अभिप्रेरणा	लेख	मनोज कुमार नं. 1	12
4.	क्रांतिकारी कलमकार फणीश्वरनाथ रेणु	लेख	मो. दानिश	14
5.	कमी तो खलेगी	कविता	विकास कुमार नं. 1	16
6.	मंदार पर्वत का महत्व	यात्रा संस्मरण	राजू कुमार सिंह	17
7.	मन : स्थिति	चिंतन	के.एम. जयपुरियार	21
8.	आँख का ऑपरेशन	कहानी	मनोज कुमार नं. 1	23
9.	पर्यावरण गीत	कविता	साम्भवी भास्कर	24
10.	हमारा धर्म, हमारा कर्म	कविता	विजय कुमार ठाकुर	25
11.	लॉक डाउन का लॉक अप	हास्य व्यंग्स	भुवन भास्कर	26
12.	बदलता समय	कविता	अरूण कुमार	28
13.	औडिटर	कविता	पी.सी. सिन्हा	29
14.	दो कविताएँ (पर निकले तो, दुपट्टा)	कविता	श्याम दत्त मिश्रा	30
15.	वाल्मीकि नेशनल पार्क	लेख	शिवशंकर राय	31
16.	शेयर बाजार – रोचक तथ्य और बारीकियाँ	लेख	सतीश चन्द्र	32
17.	माँ	कविता	पवन कुमार	34
18.	बिटिया	कविता	अमृता सिंह	34
19.	मान करो, मान करो	कविता	रामौतार प्रसाद	35
20.	हमारी जरूरत और चाहत	लेख	विजय कुमार ठाकुर	36
21.	छोटा किन्तु शक्तिशाली	कविता	शिव शरण सिन्हा	38
22.	हमारा कोलकाता	लेख	मनीष कुमार महतो	39
23.	प्रकृति का प्रांगण	कविता	हीरा कुमारी	42
24.	किस डे	हास्य व्यंग्य	राकेश कुमार नं. 3	43
25.	राधा कृष्ण का प्रेम	कविता	के.एम. जयपुरियार	44



प्रवीण कुमार सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

संदेश

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के 64 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे हर्ष और आनन्द का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सभी प्रतिबद्ध हैं। कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को निरंतर बढ़ाना हम सबका संवैधानिक दायित्व है। 'प्रहरी' इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक सशक्त माध्यम है। पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय के कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को उचित मंच मिलता है। इसमें राजभाषा हिन्दी की अभिव्यक्ति और अस्मिता का भी प्रचार-प्रसार होता है।

इस अंक की सभी रचनाएँ स्तरीय एवं सारगर्भित हैं। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। प्रसन्नता की बात है कि इस बार भी 14 सितम्बर, 2020 से 29 सितम्बर, 2020 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को संघ की राजभाषा में शत-प्रतिशत कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाता है।

कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के समय भी हिन्दी को समर्पित पत्रिका 'प्रहरी' का प्रकाशन अपने आप में एक श्रमसाध्य उपलब्धि है। ऐसे ही समेकित प्रयासों से राजभाषा हिन्दी का चतुर्दिक विकास सम्भव होगा। इसके लिए सम्पादक मंडल तथा सभी रचनाकार विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

प्रवीण कुमार सिंह
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



यह खुशी की बात है कि नई शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा, मातृभाषा में करने की नीति बनाई गई है। इससे भारत की सभी भाषाओं का विकास होगा, जिसका लाभ कालांतर में हिन्दी को भी प्राप्त होगा। इंजीनियरिंग और मेडिकल की पढ़ाई भी हिन्दी में किये जाने का प्रयास किया जाएगा। इन सब प्रयासों में प्रारंभ में कठिनाई हो सकती है पर भविष्य में परिणाम अच्छे होंगे।

बिहार के यशस्वी उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। 4 मार्च, 1921 को वर्तमान अररिया जिले के औराही हिंगना गाँव में जन्मे 'रेणु' ने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था। आजादी के बाद अपनी लेखनी में आंचलिकता को प्रमुखता देकर अपनी अलग पहचान बनाई। मैला आँचल, परती परिकथा, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड आदि कालजयी उपन्यासों की रचना की; साथ ही कहानियाँ एवं रिपोर्टाज भी लिखे। उनकी कहानी 'मारे गये गुलफाम' पर तीसरी कसम नामक प्रसिद्ध फिल्म भी बनी। रेणु जी अपने व्यक्तिगत जीवन में तथा अपनी रचनाओं में हमेशा आम जनता के साथ दृढ़ता से खड़े नजर आते हैं। 'प्रहरी' परिवार उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर उनको याद करते हुए पत्रिका के मुखपृष्ठ पर उनकी तस्वीर तथा उनके रचनाधर्मिता पर एक लेख देकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

'प्रहरी' पत्रिका का 64 वाँ अंक आप सभी पाठकों के हाथ में है। कोरोना जैसी महामारी ने जीवन के सभी पहलुओं को बुरी तरह प्रभावित किया है। यह हर्ष की बात है कि 'प्रहरी' के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को देकर इस मुश्किल घड़ी में भी पत्रिका का साथ दिया, जो कि उनकी साकारात्मक सोच और रचनाकार के जुझारूपन का परिचायक है।

इस अंक में भी बगीचे के विभिन्न फूलों की तरह ही विविध रचनाओं की खुशबू पाठकों को प्राप्त होगी।

'प्रहरी' के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए रचनाकारों के साथ-साथ प्रशासन, सामान्य और हिन्दी अनुभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

प्रधान महालेखाकार महोदय, सभी उपमहालेखाकार महोदय, तथा परामर्शी के प्रति भी आभारी हूँ जिनका मार्गदर्शन तथा सहयोग पत्रिका और सम्पादक मंडल को हमेशा प्राप्त होता रहा है।

इस अंक पर आप सभी सुधी पाठकों के प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। आपके सुझाव इस पत्रिका को बेहतर बनाने में हमेशा उपयोगी होते हैं।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

आपका

(मनोज कुमार नं०-1)

कबीर साहब के विचारों की वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता



विकास कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

यह सर्वविदित है कि संतगुरु कबीर साहब का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समस्त भारतवर्ष में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण राजनीतिक उथल-पुथल मची थी। सामाजिक व्यवस्था अनेक रूढ़ियों, कुरीतियों से जकड़ी हुई थी। मध्यकालीन सामंती व्यवस्था चरमराने लगी थी। धार्मिक विद्वेष मानवीय मूल्यों पर हावी था। वस्तुतः समाज में एक जड़त्व व्याप्त था। ऐसी संक्रान्ति बेला में समय की माँग के अनुरूप अनेक संत, महात्माओं का पदार्पण भारत-भूमि पर हो रहा था। इनमें अग्रगण्य थे - कबीर साहब, गुरु नानक साहब, दादुदयाल, मलूकदास, सूरदास, जगजीवन साहब, पलटू साहब, तुलसी साहब जिन्होंने अपनी वाणी एवं रचनाओं के माध्यम से जाति-पाति, ऊँच-नीच के भेदभाव का खंडन करते हुए मानव मात्र की समानता पर बल दिया। इन संत कवियों, विचारकों, पथ प्रवर्तकों में कबीर दास का नाम अग्रगण्य है। इन्हें संत काव्यधारा का प्रवर्तक माना जाता है। निर्गुणधारा के अंतर्गत ज्ञानाश्रयी शाखा के संत शिरोमणि कबीर साहब ने योग साधना एवं प्रेम साधना दोनों को लेकर संतमत को एक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में स्थापित किया।

सगुण भक्तिधारा में प्रचलित रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति से अलग हटकर निर्गुण राम को अपना आराध्य बनाया। उनके राम घट-घट वासी हैं। उनका कहना है-

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढे वन माहि ।

ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखत नाहिं ॥

अर्थात् संत कबीर के राम, घट-घट के वासी हैं जिसे बाहर ढूँढने की जरूरत नहीं; जैसे मृग स्वयं के अंदर कस्तूरी की उपस्थिति से अनजान वन-वन ढूँढता फिरता रहता है।

कबीर साहब के जीवन के विषय में निश्चयात्मक तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। उनके कृतित्व के रहस्य उनके जीवनवृत्त में भी भरे पड़े हैं। उनकी रचनाओं में ही

उनके व्यक्तित्व की झलक यत्र-तत्र दीखती है। कबीर साहब के बारे में यह सर्वविदित है कि उनका पालन-पोषण जुलाहा परिवार में हुआ था।

**तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा चीन्हि न मोर
गियाना।**

कबीर साहब के समकालीन संत रैदास ने भी उनके संबंध में कहा है-

**जाके ईदि बकरीदि कुल गहरे बधु करहि,
मानी यही शेष सहीद पीरा।**

अतः कबीर जन्मना हिन्दू नहीं थे तथापि वे कट्टर मुसलमान भी नहीं थे। कबीर की वाणी में नाथपंथी सिद्धांतों की गहरी छाप भी मिलती है। कबीर में हठयोग के प्रति अटूट विश्वास था। उन्होंने लिखा है-

आई हमारे कहा करेगी, हम तो जाति कमीना।

कबीर को वैष्णव भी कहा गया है। वे रामानन्द के शिष्य बताए गए हैं। उनके द्वारा राम नाम के जाप को लेकर, घर में माता संग क्लेश की बात भी कही गई है। कबीर की वाणी है-

कासी में हम प्रकट भये हैं, रामानन्द चेताये।

कबीर साहब की रचनाओं से स्पष्ट होता है कि उन्हें काशी बहुत प्रिय थी जहाँ उनका पूरा जीवन व्यतीत हुआ है। हाँ, उनके शरीर का परित्याग मगहर में हुआ। ऐसा कहा जाता है कि काशी छोड़ 'मगहर' में देहावसान के पीछे यह मंशा थी कि वे साबित करना चाहते थे कि काशी जैसी पवित्र नगरी के बाहर भी प्राण त्याग करने पर मोक्ष या राम का धाम प्राप्त हो सकता है।

वस्तुतः कबीर साहब का संपूर्ण जीवन अद्भुत कथाओं से परिपूर्ण है। उन्होंने पुस्तकीय ज्ञान की जगह प्रत्यक्ष अनुभूति को तरजीह दी। यद्यपि 'मसि कागद छुयो नहीं' की बात दर्ज है परन्तु उनके द्वारा कई रचनाएँ आज हमारे

समक्ष हैं। इनमें पदों में संकलित बीजक को प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है। उन्होंने दोहे के रूप में 'साखी' रची। कबीर साहब की अनेक साखियाँ (करीब 243) 'श्री गुरुग्रंथ साहिब' में निबद्ध बतायी जाती हैं।

कबीर साहब को आदि संत भी कहा जाता है। मध्यकालीन भारतीय काल में अनेक संतों का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने अपने चिंतन एवं रचनाओं द्वारा परम्पराओं से जकड़े विमूढ़ समाज में नवजागरण की जोत जगायी। संत साहित्य कोई मौलिक आंदोलन नहीं कहा जा सकता प्रत्युत यह विभिन्न चिंतकों, साधकों, सिद्धों, योगियों के चिंतन का क्रमिक विकास है जिसमें वेदान्त के ज्ञानवाद, सूफीवाद का प्रेम, वैष्णवजनों की अहिंसा की अवधारणा सम्मिलित हैं। इस संत साहित्य में सूरदास, तुलसीदास, जायसी, रसखान, दादूदयाल, नानक, रैदास आदि की अनवरत, एक लंबी श्रृंखला है जिन्होंने अपनी रचनाओं, वाणियों द्वारा मुख्यतः हिन्दी भाषी भू-भागों की लोक कथाओं, जन-संस्कृति, लोकगीतों को आधार बना संत साहित्य को अपार लोकप्रियता एवं जन सुलभ बनाया। संत साहित्य, भक्ति साहित्य या हिन्दी साहित्य के संदर्भ में उल्लेखित किया जाता है-

भक्ति द्राविड़ ऊपजी लाये रामानन्द।

परगट किया कबीर ने सप्त दीप नवखण्ड॥

वेदान्त की बृहत् त्रयी-उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र एवं श्रीमद् भगवद् गीता - के दर्शन, विवेचना से कबीर ऊपरी धरातल पर दीखते हैं। उनके अनुसार परमात्मा अनुभव गम्य है, अभिव्यक्ति गम्य नहीं। आँखें मूँद कर अन्तर्मुखी हो जाने पर जो 'ब्रह्म' की अनुभूति होती है वह आँखें खोलने पर दूसरों के साथ बताने के क्रम में अनिर्वचनीय हो जाती है। कबीर साहब ने स्वयं प्रकट किया है-

बोलना का कहिए रे भाई,

बोलत बोलत तत्त नसाई॥

वेदान्त दर्शन के सभी घटक यथा ब्रह्म सत्यं, जगत् मिथ्यात्व, परमात्मा की अनादि-अनन्त ज्ञानस्वरूपता, संसार की विनश्यता, ब्रह्म एवं माया की अनिर्वचनीयता, जीवात्मा की ब्रह्म से अभेदता आदि सभी कबीर की वाणी, रचनाओं में

प्राप्य है। कबीर साहब कहते हैं-

जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि हैं मैं नाहि।

सब अँधियारा मिट गया, जब दीपक देख्या माहि॥

कबीर साहब के सहज अनुभूतिमूलक वेदान्त और शास्त्रीय वेदान्त के बीच कोई अंतर्विरोध या विरोधाभास नहीं है। प्रत्युत जहाँ वेदान्ती आचार्यों ने सामाजिक स्तर पर शूद्रों से अस्पृश्यता, वर्ण विभेद कायम रखी वहीं कबीर साहब ने अपने विचार एवं आचरण में कोई दोहरा मापदंड नहीं अपनाए। इस अर्थ में कबीर अपनी वाणी एवं कर्मणा सच्चे वेदान्ती कहे जा सकते हैं।

कबीर साहब के प्रादुर्भाव से पहले भारत भूमि अनेक धर्म, मतान्तर, दर्शन, विचारधारा की ऊर्वर भूमि रही परन्तु उन्होंने अपने चिंतन को लोकोन्मुखी, सामान्य जन पर केन्द्रित रखा। अपनी वाणी एवं अनुभवजन्य विचारों से अपने चिंतन को सर्वग्राही, लोकोपयोगी, बहुजन हितार्थ, सर्वमान्य बताया।

सर्गुण की सेवा करो निर्गुण का करूँ ज्ञान

निर्गुण सर्गुण के परे तहाँ हमारा ध्यान।

कबीर साहब ने सांख्य एवं योग दर्शन को एक नया आयाम प्रदान करते हुए सांख्योक्त पचीस तत्त्वों के सिद्धांत की बजाय उनके साधना क्षेत्र से जुड़ाव रखा। प्रकृति एवं पुरुष आधारित सांख्य दर्शन जिसे द्वैत दर्शन भी कहा जाता है, के अनुसार त्रिगुणात्मक प्रकृति के विकारी होने के चलते ही विभिन्न तत्त्वों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति एवं पुरुष इन दो तत्त्वों के संयोग से संसार की उत्पत्ति होती है। कबीर साहब ने वेदान्त की माया को ठगिनी, कामिनी, मोहिनी आदि विशेषणों से चित्रित करते हुए कहा है।

“माया महा ठगिनी हम जानी

तिरगुन फाँसि लिए कर डोले, बोले मधुर वाणी।”

कबीर ने केवल संत को ही मोह पाश के बंधन से मुक्त माना है। यही माया, जीवों को हमेशा भ्रम में रखती है जिसके जाल से संयासी, मुनि, ब्राह्मण, पीर, जोगी कोई भी बच नहीं पाता।

माया दासी संत की ऊँची देई असीस।

बिलसी अरू लातौ छड़ी सुमरी-सुमरी जगदीश।

कबीर साहब ने अहंकार को ब्रह्म जिज्ञासा हेतु एक बड़ी बाधा माना है। इसी अहंकार से एकादश इंद्रियों (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा; पाँच कर्मेन्द्रियाँ—मुँह, हाथ, पैर, जननांग, उत्सर्जी अंग और एक मन) की उत्पत्ति होती है। इंद्रिय संयम एवं मन को काबू में रखने पर ही विषय-योग-वासना से मुक्ति मिल सकती है। हरि से प्रेम की लौ लगने से यह विषय-वासना दूर हो सकती है।

कबीर साहब ने भौतिक, इन्द्रियजनित आसक्तिमय जीवन की व्यर्थता, असारता को बतलाते हुए प्रकृति के बंधनों से पुरुष की मुक्ति को मानव जीवन का परम लक्ष्य बताया है। उन्होंने व्यावहारिक चिंतन पर बल देते हुए प्रकृति जनित त्रिगुण—सत्त्व, रजस एवं तमस के परिणाम 'चित्त की शुद्धि' को ही योग माना। योगदर्शन का पुरुष विशेष जो कर्म, कर्म-फल, विषय-वासना से मुक्त है वही कबीर साहित्य में ब्रह्म कहलाता है। यह कालातीत है। कबीर साहब ने उसके वाचक नाम 'ओंकार' तथा तत्संबंधी 'सोहं जप' का उल्लेख किया है। यह 'अलख पुरुष' अगम, अगोचर, अविनाशी, सर्वव्यापी है। कबीर ने निर्गुण ब्रह्म के लिए राम, हरि आदि शब्दों का प्रयोग किया है। कबीर के राम दशरथ पुत्र राम नहीं हैं।

राम राम ने सकल पसारा, दूजा राम त्रिभुवन से न्यारा।

तीजा राम घट-घट में लेटा, चौथा राम दशरथ का बेटा॥

कबीर साहब ने दुःख का मूल कारण अज्ञानता को माना है एवं इंद्रियों पर संयम, चित्त निरोध पर बल दिया है। जीवन की आवागमन से मुक्ति को पूर्ण परमानन्द कहा है। इससे डरना क्यों?

शून्य मरै अजपा मरै, अनहद हूँ मरि जाय।

राम सनेही ना मरै, कह कबीर समुझाय॥

कबीर साहब ने वर्ण व्यवस्था पर कुठाराघात करते हुए सभी जीवों को परम तत्त्व का अंश माना है। एक नूर से सब जग उपजा। कबीर ने मनसा, वाचा, कर्मणा किसी को दुःख देने को हिंसा माना।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।

अपना तन शीतल करै, औरन को सुख होय॥

कबीर ने जीवन के कष्ट के निवारणार्थ ज्ञान को आवश्यक बताया जिसे सतगुरु की कृपा से सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु शरीर एवं मन की शुद्धता, इंद्रिय निरोध, आचरण का विशोधन आवश्यक है। योग-नियमादि योगांगों के निरन्तर अभ्यास से ज्ञान एवं भक्ति की चरम स्थिति सहज संभव माना।

कबीर इस प्रकार किसी ग्रंथ, दर्शन से प्रभावित हुए बिना विभिन्न दर्शनों, शास्त्रों के चिंतन को आत्मसात् करते हुए एक लोक सम्मत, मानवतावादी दर्शन की प्रतिष्ठापना की, जिसमें विविध धर्म-दर्शनों की सारगर्भित बातों को समाहित कर लोक अपेक्षा अनुरूप लोक शब्दावली भाषा का व्यवहार कर सहज आत्मानुभूति के लोक चिंतन को प्रश्रय दिया गया है।

अन्ततोगत्वा हम यह कह सकते हैं कि न सिर्फ आदि संत कबीर की आज भी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उपादेयता निर्विवाद है प्रत्युत उनके द्वारा उद्गारित संदेश, विचार आज भी जनमानस को उद्वेलित करते हैं। उनकी वाणी न सिर्फ जन-जन में लोकप्रिय है बल्कि उसकी वर्तमान परिवेश में प्रासांगिकता आज भी विद्यमान है।





वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

महात्मा गाँधी के एकादश व्रत

महात्मा गाँधी एक ऐसा नाम जिसे सुनते ही जेहन में अहिंसा शब्द आँखों के सामने तैरने लगता है। एक ऐसा व्यक्तित्व जो इस संसार में बार बार जन्म नहीं लेता है। जो आदर्श उन्होंने मानवता के उत्थान के लिए विश्व के सामने प्रस्तुत किए वे नितान्त अनुकरणीय हैं। उनके बताए गए आदर्शों का, संसार थोड़ा भी अनुसरण करे ले तो मानवता के सामने युगों से चली आ रही चुनौतियों से पार पाया जा सकता है।

यह बड़ी विडम्बना है कि बहुत से लोग गाँधी के दर्शन में विश्वास नहीं करते और मुखर होकर उनकी काफी आलोचना करते हैं। इनमें से तो काफी लोग ऐसे हैं जिन्होंने न गाँधी के बारे में सही से जाना है, न पढ़ा है। बस सुनी सुनाई या मनगढ़ंत बातों और दुष्प्रचार के कारण गाँधी की आलोचना करते हैं, जबकि उनके अन्दर भी एक गाँधी है। जो अपेक्षा करता है कि वे भले ही दूसरों से गोडसे-सा व्यवहार (हिंसा, असत्य, द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या) करें परन्तु अन्य लोग उनसे गाँधी-सा व्यवहार (सत्य, अहिंसा प्रेम, सहिष्णुता) करें। एक प्रचलित कहावत के अनुसार यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि गाँधी के बारे में बातें करना सूर्य को दीया दिखाने के समान है। उनका दर्शन विशाल, अद्वितीय, अप्रतिम है। फिर भी मैंने उनके बारे में जो थोड़ा बहुत पढ़ा है उनमें से उनके एकादश व्रतों के बारे में बात करना चाहूँगा जो मनुष्य के जीवन को अनुशासित करने में काफी कारगर हैं। ये व्रत उन्होंने 1930 में साबरमती आश्रम में उनके साथ रहने वालों के व्यवहार को विनियमित करने के उद्देश्य से निर्धारित किए थे। इनका उद्देश्य कोई यांत्रिक सूत्र स्थापित करना नहीं था बल्कि ये नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायक हैं।

गाँधीजी की मान्यताओं के अनुसार ये ग्यारह व्रत इस प्रकार हैं। -

सत्य

गाँधीजी के मतानुसार सत्य का बड़ा व्यापक अर्थ है। यह केवल झूठ नहीं बोलना या रोजमर्रा के जीवन में असत्य पर चलने से बचना मात्र नहीं है। सत्य विचारों में होना चाहिए, सत्य बोलचाल में होना चाहिए, सत्य हमारे व्यवहार में होना चाहिए। सत्य हमारे कर्म में होना चाहिए। ऐसा कोई काम जिसमें हमें कुछ छिपाना पड़े, वह न तो सही हो सकता है और न ही सत्य। जो सत्य को जान लेता है उसे और कुछ जानना शेष नहीं रह जाता है। जो सत्य से परे है वह तार्किक नहीं है और जो तार्किक नहीं है वह असत्य है। अतः सत्य ही ईश्वर है। हमारे सारे कार्यों और जीवन का आधार स्तम्भ सत्य ही होना चाहिए। सत्य का रास्ता कठिन अवश्य है लेकिन इसमें किसी संशय और भय का स्थान नहीं है। सत्य हमें निर्भीक बनाता है।

अहिंसा

गाँधीजी कहते हैं कि किसी प्राणी को न मारना या चोट न पहुँचाना ही अहिंसा नहीं है। हाँ, यह अहिंसा का एक अंश अवश्य है परन्तु यह इसका एक सीमित अंश है। हर बुरे विचार, अवांछित जल्दबाजी, झूठ, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या या किसी का बुरा चाहना या बुरा बर्ताव करना या किसी का उपहास उड़ाने से भी अहिंसा के सिद्धांत को चोट पहुँचती है। उनके अनुसार अहिंसा का आधार मनुष्य का नैतिक व आध्यात्मिक बल है, उसकी विवशता या दुर्बलता के कारण हिंसा से दूर रहना अथवा अन्याय को सहन करना अहिंसा नहीं, कायरता है जो हिंसा से अधिक निकृष्ट व निन्दनीय है। अहिंसा के अनुसार आचरण करने के लिए व्यक्ति को अपनी स्वेच्छा से कष्ट सहने और अन्यायी के विरुद्ध दुर्भावना रहित होकर विरोध करने के लिए मुखर होना चाहिए। अहिंसा और प्रेम का मार्ग सर्वदा कठिन होता है। अहिंसा का सकारात्मक

सक्रिय अंश प्रेम है। यद्यपि अहिंसा का पूर्णरूपेण पालन करना सम्भव नहीं है क्योंकि मनुष्य रोजमर्रा की जिन्दगी में जाने-अनजाने कितने प्राणियों, सूक्ष्म जीवों को हानि पहुँचाता है जो उसके वश में नहीं होता है। परन्तु मनुष्य ही एक मात्र ऐसा जीव है जो अपने आचरण को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से नियंत्रित कर सकता है। यदि आपके मन में संसार के समस्त प्राणियों के लिए प्रेम समाहित है तो आप काफी हद तक अहिंसा के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।

ब्रह्मचर्य

गाँधीजी की मान्यताओं के अनुसार मनुष्य जीवन में ब्रह्मचर्य आध्यात्मिक और नैतिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ब्रह्मचर्य केवल काम वासना को नियंत्रित करने तक सीमित नहीं है बल्कि यह बहुत व्यापक है। गाँधीजी के अनुसार ब्रह्मचर्य का पूर्ण और उचित अर्थ ब्रह्म की खोज है, केवल इन्द्रियमात्र को संयमित करना नहीं है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य मन, वचन और कर्म से अपने आचरण को नियंत्रित करना है। ब्रह्मचर्य का अर्थ मन में शुद्ध विचारों का विकास कर जीवनपर्यन्त उसका अनुसरण करना है।

स्वादेन्द्रिय पर नियंत्रण

ब्रह्मचर्य के पालन हेतु स्वादेन्द्रिय पर नियंत्रण आवश्यक है। स्वादेन्द्रिय पर नियंत्रण पा लेने से मनुष्य के लिए ब्रह्मचर्य का पालन सरल हो जाता है। जिस प्रकार हम दवाईयों को बिना उसके स्वाद पर ध्यान दिए हुए ग्रहण करते हैं उसी प्रकार हमें भोजन ग्रहण करना चाहिए बिना यह विचार किए कि यह स्वादिष्ट है या नहीं। भोजन उतना ही करें जितना आवश्यक हो। केवल स्वाद के लिए किसी खाद्य को ग्रहण करना अनुचित है।

अधिकांश लोग अपनी इन्द्रियों के दास हो जाते हैं। जब मन करता है चाहे आवश्यकता हो, न हो खाते जाते हैं। इससे शरीर को नुकसान पहुँचता है। हमें बहुत सारी ऐसी चीजों का त्याग करना चाहिए जो पौष्टिकता के लिहाज से हमारे शरीर के लिए आवश्यक नहीं हैं। इस प्रकार अवांछित खाद्यों के निषेध से बड़ी सरलता से स्वयं को नियंत्रित किया जा सकता है।

चोरी न करना

गाँधीजी का मानना है कि जो व्यक्ति चोरी करता है वह सत्य व प्रेम के मार्ग पर चल ही नहीं सकता है। किसी अन्य व्यक्ति से संबंधित कोई चीज बिना उसकी अनुमति के लेना चोरी है। इस प्रकार यह समझ कर कि अमुक वस्तु का मालिक कोई नहीं, उठा लेना भी चोरी ही है। हम केवल उन्हीं वस्तुओं की चोरी नहीं करते जो दूसरों की हो, हम उन वस्तुओं की भी चोरी करते हैं जो स्वयं हमारी हों जैसे किसी अपने से कुछ छिपाकर खाना या नशा करना या कुछ छिपाना आदि।

हमें अपनी वास्तविक आवश्यकताओं का ज्ञान होना चाहिए। अपनी आवश्यकताओं को अनावश्यक रूप से बढ़ाना और उनकी पूर्ति में लिप्त हो जाना भी चोरी करना है। अपनी न्यूनतम वास्तविक आवश्यकताओं से अधिक प्राप्त करने का प्रयास भी चोरी की श्रेणी में आता है। ऐसा कोई कार्य जिसे हमें छिपाना पड़े वह चोरी है।

अस्वामित्व

गाँधीजी का मानना है कि चोरी न करना और अस्वामित्व एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह केवल मानसिक अवस्थाएँ हैं। आवश्यकता से अधिक न तो संग्रह करना चाहिए न ही उपभोग। अतः हमें अपनी भोग-विलासिता को नियंत्रित और न्यून रखना चाहिए। इरादतन व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को कम करता जाता है और थोड़े में भी गुजारा करने लगता है। इससे अस्वामित्व की आदत का विकास होता जाता है। यद्यपि पूरी तरह से ऐसा करना संभव नहीं है परन्तु जो व्यक्ति ऐसा करता है वह निरन्तर अस्वामित्व की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

रोजी कमाना

मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है जिसके लिए उसे यथोचित श्रम करना चाहिए। हमें अपने बौद्धिक विकास का उपयोग आवश्यकता से अधिक धन और सम्पत्ति के संचय के लिए नहीं अपितु मानवता की सेवा के लिए करना चाहिए। यदि प्रत्येक मनुष्य इस नियम का पालन कर ले तो संसार में सब बराबर होंगे और कोई व्यक्ति भूखा नहीं सोएगा और यह संसार अनेक पापों से

मुक्त हो जाएगा।

रोजी-रोटी कमाने के लिए मेहनत यानि शारीरिक श्रम करना हर उस मनुष्य के लिए आवश्यक है जो सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य का पालन करता है। चोरी न करने और अस्वामित्व के लिए भी शारीरिक श्रम आवश्यक है। मानव समाज को तभी हानि नहीं पहुंचा सकता जब वह अपने जीवन को बचाए रखने के लिए न्यूनतम वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शारीरिक श्रम करता है।

स्वदेशी

गाँधीजी के स्वदेशी का अर्थ विदेशियों अथवा अन्य देशवासियों से घृणा करना या द्वेष रखना नहीं है वरन् अपने पड़ोसियों के प्रति अपना पहला दायित्व निभाना है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने पड़ोसियों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करे उनकी सहायता करे तो विश्व में कोई भी ऐसा नहीं बचेगा जिसे सहायता की आवश्यकता हो। वास्तव में स्वदेशी के अन्तर्गत किसी प्रकार के भेद-भाव की गुंजाइश नहीं है। अपने पड़ोसियों की मदद से आशय स्थानीय उत्पादकों को प्राथमिकता देना है, हो सकता है कि उनके उत्पादों में कमियाँ हो जिसे सुधारा जा सकता है परन्तु उसका त्याग कर देना और विदेशी अपना लेना उचित नहीं है। स्वदेशी जीवन का नियम है और सदैव इसका पालन होना चाहिए।

निर्भयता

निर्भयता अर्थात् अभय को गाँधीजी ने महत्वपूर्ण माना है। गाँधीजी का मानना है कि अभय का अर्थ समस्त बाहरी भयों जैसे मृत्यु का भय, रोग का भय, धन-दौलत लूट जाने का भय, प्रतिष्ठा खोने का भय, से सम्पूर्ण मुक्ति है। हमें सिर्फ ईश्वर से डरना चाहिए। जो केवल ईश्वर से डरते हैं उन्हें और किसी का भय नहीं होता है। सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलने के लिए निर्भिकता एक अनिवार्य शर्त है। जो व्यक्ति अपने अपने मन में विकारों के साथ-साथ अन्य आपत्तियों और बाधाओं का भय रहता है वह सत्य और अहिंसा जैसे व्रतों का पालन नहीं कर सकता है।

अछूतोद्धार

यदि हम ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते हैं तो यह बात सर्वदा सत्य है कि इस संसार में सभी प्राणियों और जीव-

जन्तुओं को ईश्वर ने ही जन्म दिया है। जब ईश्वर ने किसी में भेद नहीं किया तो मनुष्य को करने का अधिकार किसने दिया? सभी में ईश्वर का ही वास है। हम में, तुम में, खड़े खम्बे, सब में राम विराजे हैं तो फिर जन्म से कोई अछूत कैसे हो सकता है ? किसी को अछूत मानना नितान्त अनैतिक व्यवहार है और जो नैतिक नहीं वह धार्मिक कैसे हो सकता है ? हमें प्रत्येक जीव से वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे हम स्वयं से करते हैं। जो व्यक्ति छुआछूत की दुर्भावना से ग्रस्त है उनकी सारी शिक्षा व्यर्थ है। छुआछूत समाप्त करने से आशय संसार के प्रत्येक प्राणी से प्रेम करना और उसकी सेवा करना है।

सहिष्णुता

गाँधीजी के मतानुसार सहिष्णुता का आशय अपने से भिन्न विचार रखने वालों को भी सहन करना है जबकि अहिंसा सर्वधर्म समभाव सिखाती है। अर्थात् सभी धर्मों को समान भाव से देखना चाहिए। चूंकि हम अपूर्ण हैं, अतः हमारे द्वारा दी गयी धर्म की सभी व्याख्या भी अपूर्ण हैं, इसलिए यह सोचना कि धर्म के प्रति हमारी अवधारणा ही सत्य है बिल्कुल गलत है। इन अवधारणाओं में सदैव विकास एवं व्याख्या की संभावना बनी रहती है। तभी तो इतिहास में भी इतने सारे धर्म सुधारों को लोगों ने अपनाया। अतः विभिन्न धर्मों की आपस में तुलना यथोचित नहीं है। सभी तरह के विचारों से नए रहस्यों का उद्घाटन होता है लेकिन कोई भी अवधारणा अंतिम अवधारणा नहीं होती है। इसलिए, हमें अपने मतों के दोषों के प्रति सर्तक रहना चाहिए और इन दोषों को दूर करने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए।

सहिष्णुता सही और गलत को पहचानने में बाधा नहीं डालती है वरन् दूसरों के विचारों को भी पूर्ण सम्मान देती है। सभी धर्म कुछ बुनियादी विचारों पर आधारित हैं और सभी धर्मों में महान विचारक और संत हुए, उनमें मतभेद भी रहे परन्तु मनभेद नहीं, क्योंकि सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। अन्त में यही कहना चाहूँगा कि गाँधीजी के इन ग्यारह व्रत लेने का अर्थ यह नहीं है कि हम प्रारम्भ से ही इसका पूर्णतः पालन करने में सक्षम हैं। इसका अर्थ है कि हम मन, कर्म और वचन से इसके लिए निरन्तर और ईमानदारी से प्रयास करते रहें।

इच्छा शक्ति को जाग्रत करने की कला है अभिप्रेरणा



मनोज कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

अभिप्रेरणा (Motivation) अंग्रेजी के Motive से बना है जिसका अर्थ है “इच्छा शक्ति को जाग्रत करना। इसका तात्पर्य उस शक्ति से है जो व्यक्तियों में काम करने की इच्छा को जाग्रत करती है। दूसरे शब्दों में अभिप्रेरणा मनुष्य के अन्दर वह तत्व है जो उसे किसी खास काम को करने के लिए उत्साहित करता है।

प्रबंधन के अनेक विद्वानों ने इसकी कई परिभाषाएँ दी हैं—

जूसियस—अभिप्रेरणा किसी व्यक्ति को इच्छित कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने की क्रिया है।

रॉबर्ट डयूबिन—अभिप्रेरणा उन शक्तियों का समूह है जो किसी संगठन में एक व्यक्ति को काम प्रारम्भ करने तथा उस पर बने रहने के लिए प्रेरित करता है।

अभिप्रेरणा का उद्देश्य

किसी संगठन/कार्यालय में अभिप्रेरणा का उद्देश्य निम्नलिखित रूप से कहा जा सकता है—

- कर्मचारियों को प्रोत्साहित करके उनके मनोबल को बढ़ाना।
- कर्मचारियों की आर्थिक, वैयक्तिक, सामाजिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करना।
- कर्मचारियों से स्वैच्छिक सहयोग प्राप्त करना।
- कार्यक्षमता तथा उनके मनोबल में संतुलन स्थापित करना।
- मधुर श्रम संबंधों की स्थापना करना।
- थोपे गए नियंत्रण के स्थान पर कर्मचारियों में आत्म नियंत्रण की प्रवृत्ति जाग्रत करना।
- जीवन के अन्य मूल्य भी व्यक्ति को कार्य हेतु प्रेरित करते हैं।

अभिप्रेरणा का महत्व

- लक्ष्यों को प्राप्त करना सरल एवं सुलभ हो जाता है।
- अभिप्रेरणा से मनोबल ऊँचा रखने में सहायता मिलती है।
- निराशा एवं असंतोष की भावना उत्पन्न नहीं होती है।

अभिप्रेरणा के प्रकार

- **सकारात्मक अभिप्रेरणा**—यह निम्न रूप से कार्य करता है—

- नगद पारिश्रमिक देना / बोनस
- मान-सम्मान देना
- पदोन्नति का अवसर प्रदान करना
- पुरष्कृत करना

सकारात्मक अभिप्रेरणा कर्मचारियों को आनंद एवं संतुष्टि प्रदान करता है। यह सबसे लोकप्रिय रूप है।

- **नकारात्मक अभिप्रेरणा**—यह अभिप्रेरणा भय, दबाव के आधार पर होता है।

- दंड देना, डाँटना, फटकारना, नौकरी से अलग करना, वेतन वृद्धि रोकना, पदोन्नति रोकना इत्यादि।

इस प्रकार की अभिप्रेरणा का उपयोग अपवादस्वरूप ही करना चाहिए। इससे असंतोष एवं विद्रोह फैलने की आशंका रहती है। इसे अमानवीय माना जाता है।

अभिप्रेरणा की विधियाँ

किसी भी संगठन में कर्मचारियों को अभिप्रेरित करने की अनेक विधियाँ होती हैं—

- **उद्देश्यों के स्पष्टीकरण द्वारा**—संगठन के कार्मिकों को संस्था के लक्ष्यों व उद्देश्यों की जानकारी प्रदान करना। व्यक्तिगत हित संस्था के हित से अलग नहीं है।

- **कुशल नेतृत्व**—कर्मचारियों की कठिनाइयों को सुनना एवं दूर करना।
- **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा**।
- **सहभागिता द्वारा**—प्रबंधन एवं निर्णय में भागीदार बनाकर अभिप्रेरित किया जाता है। सहभागिता कर्मचारियों को मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की संतुष्टि करता है।
- **चुनौती द्वारा**—कार्य की लक्ष्यों को पूरा करने पर पुरस्कार देना।
- **अन्य**—कार्यस्थल पर सुखद वातावरण का निर्माण करना। कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना। कर्मचारियों के लिए

कल्याणकारी योजना की शुरुआत करना।

इस प्रकार किसी भी संगठन की सफलता में, व्यक्ति के पेशेवर या व्यक्तिगत जीवन में अभिप्रेरणा का अत्यधिक महत्व है। दुनिया में महान व्यक्तियों के कार्य हो, महान कलाकृति, निर्माण, आविष्कार/खोज सभी के पीछे अभिप्रेरणा ही कार्य करता है। अभिप्रेरणा के अभाव में व्यक्ति का जीवन निराशा/अवसाद से भर जाता है। एक सफल नेतृत्वकर्ता अपने कार्मिकों में, जनता में, अभिप्रेरणा द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित करता है।



प्रशासनिक शब्दावली

Key-board	कुंजीपटल
Key industry	आधारभूत उद्योग
Key map	मूल नक्शा
Key Post	मुख्य पद
Fiscal Policy	राजकोषीय नीति
Financial Statement	वित्तीय विवरण

क्रांतिकारी कलमकार फणीश्वरनाथ रेणु



मो. दानीश
कनिष्ठ अनुवादक

हिन्दी साहित्य की कालजयी शख्सियत फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जीवन अपार जिजीविषा और मनुष्य की मुक्ति साधना हेतु किए गए अथक संघर्षों की कहानी है। दरअसल रेणु के लिए 'लिखना' महज 'स्वांतः सुखाय' नहीं था बल्कि इससे कहीं ज्यादा वे लेखन को सामाजिक बदलाव का सबसे प्रेरक माध्यम मानते थे। यही कारण है कि कलमकार रेणु की संघर्षमयी जीवनयात्रा के कई आयाम हमें देखने को मिलते हैं। इन आयामों में किशोर रेणु भारत छोड़ो आंदोलन के निर्भीक क्रांतिकारी के रूप में दिखते हैं तो युवा रेणु नेपाली जनता द्वारा राजशाही के विरुद्ध छेड़े गए सशस्त्र संघर्ष में शस्त्र धामे भी दिखते हैं। रेणु के बहुआयामी संघर्षों की यात्रा यहीं नहीं रूकती। आजादी के बाद जब सत्ता जनता के प्रति अपने दायित्वों से दूर होने लगी, लोकतांत्रिक मूल्यों का लगातार क्षरण होने लगा, अमीर गरीब की खाई लगातार बढ़ने लगी तब रेणु, जेपी, लोहिया और आचार्य नरेन्द्र देव की अगुआई में शोषक सत्ता के विरुद्ध छेड़े गए जनआंदोलन में भी मजबूत सिपाही की भूमिका निभाते दिखायी पड़ते हैं। कुल मिलाकर कहा जाए तो असाधारण व्यक्तित्व के मालिक रेणु के लिए कलम से लिखना कोई सुविधा भोगी कार्य नहीं था बल्कि यह एक मिशनरी अभियान था जिसके माध्यम से वे सामाजिक गैर-बराबरी, सांस्कृतिक पिछड़ेपन और अराजक सत्ता को प्रकट करना चाहते थे। अपनी तमाम रचनाओं के माध्यम से रेणु ने इन उद्देश्यों को स्पष्ट भी किया है।

अपनी तमाम कहानियों, उपन्यासों, रिपोर्टाजों के माध्यम से रेणु ने मनुष्य के प्रति अपनी जनपक्षधरता को बहुत सशक्त ढंग से पेश किया है। रेणु, जीवन और मनुष्यों को सबसे बढ़कर प्यार करते थे और यही कारण है कि वे हर उस व्यक्ति/व्यवस्था/तंत्र के विरुद्ध संघर्ष करते हैं जो मनुष्य से जीने और प्रगति की संभावनाएँ छीनता है। अपने कालजयी उपन्यास 'मैला आँचल' में रेणु ने इसी भावभूमि पर कथा का विस्तार किया है जिसमें 'कमानेवाला खाएगा' का उद्धोषण

समतामूलक समाज की माँग को प्रतिध्वनित करता है। रेणु ने यूँ ही नहीं लिखा— "तेरे लिए मैंने लाखों के बोल सहे।" जाहिर-सी बात है जब रेणु धरती पुत्रों की अथक संघर्षमयी पीढ़ी को अपनी कलम से चित्रित कर रहे थे तो समाज के संप्रभु वर्गों को यह पसंद नहीं आता था और इसके लिए वे लेखक पर हमेशा टीका-टिप्पणी करते रहते थे। रेणु को अपने इस मिशनरी लेखन के लिए बहुत अपमान भी सहना पड़ा।

4 मार्च, 1921 को बिहार के तत्कालीन पूर्णिया जिला (वर्तमान में अररिया जिला) के औराही हिंगना गाँव में जन्मे रेणु की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अररिया हाई स्कूल और विराटनगर के कोइराला परिवार के आदर्श स्कूल से हुई। बचपन से ही रेणु में साहित्यिक अभिरूचि के साथ-साथ देशसेवा की भावना का भी विकास हो रहा था। 1930-31 में महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी के विरोध में उन्होंने अररिया में छात्रों की हड़ताल में अग्रणी भूमिका निभायी और ठीक उसी के आस-पास स्कूल के शिक्षक गणेशप्रसाद विश्वास संपादित हस्तलिखित पत्रिका 'खंगार सेवक' में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी।

रेणु का पूरा नाम फणीश्वरनाथ शिलानाथ मंडल था। 'रेणु' नामकरण के पीछे एक रोचक कथा है। जिस वर्ष रेणु का जन्म हुआ। उसी वर्ष एक बड़े फौजदारी मुकदमे के सिलसिले में परिवार में पहली बार ऋण चढ़ गया। इसलिए दुलार से उनकी दादी और माँ उन्हें रिनवा पुकारने लगी। परिवार पर ऋण होने के कारण ही वह 'रिनुआ' कहलाए, जो कालांतर में ऋणवाँ, रिणु फिर रूणु हुआ। रेणु ने इस बारे में लिखा है, रेणु नाम श्रीकृष्ण प्रसाद कोइराला का दिया है।

अपनी धरती और धरतीपुत्रों से रेणु को अगाध प्रेम था और वे सदा इन्हीं के बीच रहना चाहते थे। 'धर्मयुग' पत्रिका के 'कथादशक' के अंतर्गत प्रकाशित 'पाण्डुलेख' शीर्षक संस्मरण में रेणु ने लिखा है कि रेणु के पिता उन्हें वकील बनाना चाहते थे परन्तु रेणु चाहते थे कि वह गाँव के समीप के

सिमराहा रेलवे स्टेशन का स्टेशन मास्टर बनें और इसका कारण वे इस प्रकार बताते हैं— “सिमराहा स्टेशन का मास्टर सदा चुपचाप बैठकर लिखता रहता है। दिन में सिर्फ दो बार गाड़ी आती-जाती है। स्टेशन के ईनारे के पास खजूर के पेड़ में बया के घोंसले हैं चिड़िया दिन-रात चहचहाती रहती है। स्पष्ट है कि रेणु को अपने स्थानीय परिवेश से बेहद लगाव था।”

रेणु का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक और प्रभावशाली था। लम्बे केश-गुच्छों से ढंका हुआ चौड़ा सिर, उन्नत ललाट, ललाट के नीचे नासिका पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा-जिसमें से झाँकती दूरदर्शी दिव्य दृष्टि। भोला मासूम चेहरा। उभरे फैले होठों पर फिसली शिशुवत् मुस्कान। ओठों से झाँकती सीपी में मोती की तरह निबद्ध चमकती दंतावली श्यामल सांवरे की तरह सलोनी सूरत। सामान्य कद-काठी के अजान बाहुवाले व्यक्ति। दम-दम दमकता साफ धुला और प्रेस किया पायजामा, पैरों में चप्पल। चेहरे पर उत्साह और पीड़ित वर्ग की व्यथा के प्रति सचेत ग्राम्य तथा शहरी संस्कृति का समन्वय करनेवाली नारी सुलभ सहजता युक्त व्यक्तित्व का नाम ही फणीश्वरनाथ रेणु था।

स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व के रेणु ने कभी नौकरी-चाकरी के बंधनों में बंधना स्वीकार नहीं किया। अपने व्यवसाय या पेशे के संबंध में रेणु ने लिखा है— “पेशे के नाम पर मैंने राजनीति को छोड़कर (या इसे भी पेशे में ही जोड़ा जाए) जो-जो काम किए हैं उसकी तालिका प्रस्तुत है—“मित्र की मिठाई की दुकान की मैनेजरी कर चुका हूँ—दो महीने। शहर के प्रतिष्ठित पुस्तकालय में— नौ महीने लाइब्रेरियन। एक राइस एंड आयल मिल्स की नौकरी— दूर-देहात में जाकर धान खरीदने की— तीन दिन। ऑल इंडिया रेडियो में ढाई-तीन वर्ष।”

कुल मिलाकर कहा जाए तो मतवाला स्वभाव के रेणु के लिए लेखन का कार्य ही पूर्णकालिक काम था जिसमें उन्होंने तमाम पेशेवर प्रतिबद्धताओं का आजीवन निर्वहन किया।

रेणु मानवता के लेखक थे, इसीलिए ‘मानवीय संवेदना’ उनके रचनाओं के केन्द्र में है। यह जरूर है कि ‘मैला आँचल’ जैसे क्लासिक उपन्यास को रचने के साथ ही रेणु ने आँचलिकता की परंपरा को पूर्णतः प्रतिष्ठित कर दिया लेकिन उनकी रचनाओं में दर्ज कथायात्रा का विस्तार किसी अंचल विशेष तक ही सीमित नहीं है बल्कि वो अपने

प्रगतिशील भावबोध के संदर्भ में अत्यंत व्यापकता को ग्रहण कर लेता है। रेणु के उपन्यास व कहानियाँ काल व स्थान की सीमाओं को अतिक्रमित कर समग्र मानवता के रचनात्मक दस्तावेज बन जाते हैं।

रेणु के सशक्त एवं प्राणवान साहित्य के पीछे उनके अनुभवों की शक्ति विद्यमान है। ये अनुभव ही उनकी कृतियों को प्रामाणिक सिद्ध करते हैं। रेणु दुनिया के उन चुनिंदा लेखकों में थे जिनके लिए लिखने और जीने का एक ही मतलब था—जनपक्षधरता। वो बार-बार कहते हैं—“मेरे लिए प्रतिबद्धता बाकी सब बकवास है।” रेणु शब्द और कर्म के बीच की दूरी को अनैतिक और बेईमानी मानते थे। एक साक्षात्कार में रेणु ने कहा है, “लिखने के क्रम में मैं अपने आपको खोजता हूँ, इसलिए लिखता हूँ। पर लिखता तो मैं वही हूँ, जो देखता हूँ, जो सोचता हूँ, अनुभव करता हूँ। वस्तुतः भोगे हुए यथार्थ की सार्थक अभिव्यक्ति ही उनके साहित्य में हुई है।

रेणु की जितनी भी रचनाएँ हैं सब अपने आप में अप्रतिम और वैविध्यपूर्ण हैं। उनके महत्वपूर्ण उपन्यासों में मैला आँचल, परती परिकथा, कितने चौराहे, जुलूस, दीर्घतपा, पलटू बाबू रोड अत्यंत पठनीय और विचारोत्तेजक हैं। ठीक यही गुण उनकी कहानियों मारे गये गुलफाम, ठुमरी, पहलवान की ढोलक, अच्छे आदमी, आदिम रात्रि की महक, रसूल मिसतरी आदि में देखा जा सकता है। इन कहानियों में लालित्य के नवीन प्रयोगों का संयोजन भी अत्यंत कुशलता से किया गया है।

इसके अलावा रेणु जी द्वारा लिखित रिपोर्टाजों—ऋणजल, धनजल, बिदापत नाच, पटना जल प्रलय, हड्डियों का पुल, नयी कहानी, पुराना पाठ, भूमिदर्शन की भूमिका आदि में तद्युगीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों का यथार्थ चित्रण देखा जा सकता है। ये रिपोर्टाज दरअसल पत्रकारिता विधा के उच्च मापदंडों के पैमाने पर बिल्कुल खरे उतरते हैं। कलम की ताकत से लोकतंत्र को मजबूत करने की प्रक्रिया को इन रिपोर्टाजों ने पूर्णतः प्रतिबिम्बित किया है।

रेणु का लेखन सच्चे अर्थों में प्रतिरोध का लेखन था जिसके माध्यम से वे हर गैर-जिम्मेदार सत्ता को आईना दिखाते हैं और बदलाव की मुहिम को तेज करने का आह्वान कर जनपक्षधरता को मजबूत करते हैं।



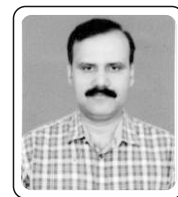
विकास कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

कमी तो खलेगी

हिन्दी वर्णमाला के सुवर्ण अक्षरों में पिरोये
अप्रतिम शब्दों में निबद्ध
वल्लभ-पंक्तियाँ तो सजती रहेंगी
पर वो कविता न होगी
सुर तो सजेंगे, साज भी बिछेंगी
पर खनक, दमक, महक भरी
वो आवाज न होगी
कमी तो खलेगी ...

नैराश्य के तिमिर में
जुगनूँ तो भी टिमटिमाएंगें
अमावस की घनी ये रात
तो भी गुजर जाएगी
शशि चन्द्र औ' भास्कर
फिर भी नभ पटल पर दिखेंगे
नवल दूबों पर नित नयी
ओस की नूतन चादर बिछेगी
पर, धरा पर प्रखर मुस्कान बिखेरती
सप्त रंगों से सुसज्जित रश्मि रथों पर सवार
वो उषा षष्ठी तो न आएगी
कमी तो खलेगी
कमी तो बेहद खलेगी.....





राजू कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

मंदार पर्वत का महत्व

ज्योंहि आप थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक के सुवर्णभूमि हवाई अड्डे के अंदर प्रवेश करते हैं, समुद्र मंथन का भव्य दृश्य दृष्टिगोचर होता है। निश्चय ही यह हमें अपने देश की धरती का एहसास कराता है और सहसा याद आता है बिहार के बाँका जिले में स्थित मंदार पर्वत।

प्रसिद्ध मंदार पर्वत बिहार राज्य के बाँका जिले के बौंसी गाँव में अवस्थित है। इस पर्वत की उँचाई लगभग 750 फीट है। यह भागलपुर से 51 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ रेल या बस से सुविधापूर्वक पहुँचा जा सकता है। बाँका से इसकी दूरी लगभग 21 किलोमीटर है।

यहाँ का निकटतम हवाई अड्डा, जयप्रकाश नारायण हवाई अड्डा, पटना है। पटना से बस, टैक्सी या रेलवे द्वारा आसानी से बाँका या भागलपुर पहुँचा जा सकता है। भागलपुर से मंदार पर्वत के लिए सीधे रेलगाड़ी सेवा उपलब्ध है। भागलपुर और मंदार के बीच अभी चार ट्रेनें चलती हैं।

मंदार का तात्पर्य स्वर्ग से है। ऐसी मान्यता है कि मंदार पर्वत पृथ्वी का स्वर्ग है और सृष्टि के आदिकाल से ही मौन, दृढ़वत खड़ा है। मंदार पर्वत का उल्लेख पौराणिक धर्मग्रंथों में हुआ है। हिंदू धार्मिक ग्रंथों के अनुसार देवताओं और असुरों ने मंदार पर्वत पर वासुकी नाग को लपेटकर इसे मथानी की तरह प्रयोग किया था। सदियों से खड़ा मंदार पर्वत आज भी लोगों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है। इस पर्वत को मंदराचल, मंदारगिरि या मंदार पर्वत भी कहा जाता है।

पौराणिक महत्व

विभिन्न पौराणिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्रंथों में

अनेक बार मंदार का नाम आया है। स्कंदपुराण में तो मंदार महात्म्य नामक एक अलग अध्याय है। समुद्र मंथन का आख्यान महाभारत के आदि पर्व के 18वें अध्याय में भी है।

पुराणों के अनुसार देव एवं दानवों ने क्षीरसागर को मथने के लिए इस पर्वत का उपयोग किया था जिसमें वासुकी नाग को रस्सी की तरह इस्तेमाल किया गया था। इस मंथन से अमृत और विष के अलावे कामधेनु गाय, उच्चैश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, रंभा नामक अप्सरा, देवी लक्ष्मी, वारुणी (मदिरा), चंद्रमा, पारिजात वृक्ष, पांचजन्य शंख और भगवान धनवंतरि जैसे चौदह रत्न प्राप्त हुए थे।

मंदार पर्वत पर अभी भी धारीदार लकीरें दिखती हैं जो एक दूसरे से करीब छह फीट की दूरी पर बनी हुई हैं। ऐसा लगता है कि ये किसी गाड़ी के टायर के निशान हों। ये लकीरें किसी भी तरह मानव निर्मित नहीं लगती। जन विश्वास है कि समुद्र मंथन के दौरान वासुकी के शरीर की रगड़ से यह निशान बने हैं। अभी भी पर्वत के ऊपर शंख कुंड में एक विशाल शंख की आकृति स्थित है। कहा जाता है, भगवान शिव ने इसी महाशंख से विषपान किया था।

मंदार पर्वत के बारे में एक कथा यह भी प्रचलित है कि भगवान विष्णु ने मधुकैटभ राक्षस को पराजित कर उसका वध किया और उसे विशाल मंदार के नीचे दबा दिया। पुराणों के अनुसार यह लड़ाई दस हजार साल तक चली।

धार्मिक महत्व

प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण मंदार केवल पौराणिक एवं

ऐतिहासिक धरोहर ही नहीं, बल्कि सनातन हिन्दू धर्म, दिगम्बर जैन और आदिवासी सफा सम्प्रदाय का समागम स्थल है। पर्वत की तराई में सफा होड़ धर्म के संस्थापक स्वामी चन्द्र दास के द्वारा मंदिर बनवाया गया था। इस पर्वत के सबसे ऊपर जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की निर्वाण स्थली है। इसके अलावा मंदार पर्वत पर नरसिंह भगवान का भी मंदिर है। पर्वत की चोटी पर अवस्थित चरण चिह्न का दर्शन व पूजन तीनों सम्प्रदाय अपनी-अपनी आस्था के अनुसार करते हैं।

ऐतिहासिक महत्व

पुरातन काल में आज बंगाल की खाड़ी कहा जानेवाला समुद्र गंगा नदी के बाएं भाग में सर्वत्र फैला था। जैसे-जैसे हिमालयी मिट्टी इसे पाटती गई वैसे-वैसे समुद्र पूरब की तरफ खिसकता गया। जब टिथिस सागर में मिट्टी भरने की वजह से आज के उत्तर प्रदेश और बिहार की भूमि निर्मित हुई, तब समुद्र कोसी-गंगा संगम के पूरब खिसक गया। गंगा का संगम राजमहल के पास संकीर्ण रूप में समुद्र से होने लगा। उस समय संपूर्ण बंगाल समुद्र के गर्भ में था। संभवतः इसी काल में देवासुरों द्वारा समुद्र मंथन हुआ था।

भूतत्ववेत्ताओं का कहना है कि यह पर्वत समुद्र तल से एक ठोस शिलापिण्ड के रूप में निकला है, मानो कोई शालिग्राम पिण्ड हो। इसमें न तो कोई मिलावट है और न ही यह परतदार है। यह ग्रेनाइट का एक ठोस पिण्ड है। यह एक विशेष प्रकार का पत्थर है जो निश श्रेणी का है। ऐसा प्रतीत होता है कि संपूर्ण मंदार बहुत काल तक समुद्र के गर्भ में था।

पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार मंदराचल की अधिकांश मूर्तियाँ उत्तर गुप्त काल की हैं। इस काल में मूर्तिकला की काफी उन्नति हुई थी। पूरे पर्वत पर यत्र-तत्र अनेक सुंदर मूर्तियाँ हैं जिनमें शिव, सिंहवाहिनी दुर्गा, महाकाली, नरसिंह आदि की प्रतिमाएँ प्रमुख हैं। चतुर्भुज विष्णु और भैरव की

प्रतिमा अभी भागलपुर संग्रहालय में रखी हुई हैं।

ब्रिटिश सर्वेयर फ्रांसिस बुकानन ने भी इस पर्वत के संबंध में बहुत कुछ लिखा है। उसने बौंसी में प्रतिष्ठित मधुसूदन की मूर्ति को देखा था और इसे अत्यंत आधुनिक कलाकृति बताया था। वह चोल राजा छत्रसेन के भवन खंडहर की चर्चा करता है। वह मंदार के शिलालेखों की भी चर्चा करता है। बुकानन इस भू-भाग पर कमशः चोलों, नटों, खेतारियों और राजपूतों के शासन का उल्लेख करता है।

पर्यटन की दृष्टि से महत्व

मंदार पर्वत की तराई में पापहरणी तालाब स्थित है। प्रचलित मान्यता के अनुसार कर्नाटक के एक कुष्ठ पीड़ित चोलवंशीय राजा ने मकर संक्रांति के दिन इस तालाब में स्नान किया था, जिसके बाद वे पूर्णतः स्वस्थ हो गए। तभी से इसे पापहरणी तालाब कहा जाता है। इसके पूर्व पापहरणी तालाब मनोहर कुण्ड के नाम से जाना जाता था।

पापहरणी तालाब के मध्य में लक्ष्मी-नारायण मंदिर है। तालाब के दाहिने छोर पर समुद्र मंथन की प्रतिकृति बनी हुई है। हर वर्ष मकर संक्रांति पर यहाँ मेले का आयोजन होता है। मेले के पहले मधुसूदन भगवान की प्रतिमा को बौंसी स्थित मंदिर से मंदार पर्वत तक की यात्री कराई जाती है, जिसमें लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं। उक्त अवसर पर यहाँ एक माह तक मंदार बौंसी मेला लगता है जो अंग-बंग और आदिवासी संस्कृतियों का मिलन स्थल होता है।

पापहरणी सरोवर के पास पहुँचते ही बगल की नग्न चट्टान से थोड़ी पूरब से निकल कर ऊपर जानेवाला सुविधाजनक एवं चालू रास्ता दिखलाई पड़ता है। यह मार्ग चट्टानों को काटकर सीढ़ीनुमा बनाया गया है। कहा जाता है कि इन सीढ़ियों को उग्र भैरव नामक राजा ने बनवाया था। इस मार्ग से थोड़ा ऊपर जाने पर दाहिने भाग में दुर्गा अथवा काली की मस्तकविहीन एक मूर्ति दिखाई पड़ती है। इसे छिन्नमस्ता

दुर्गा का मंदिर माना जाता है। यहाँ से थोड़ा ऊपर बढ़ने पर एक शिला पर एक छोटी मूर्ति मिलती है जिसे कुछ लोग महावीर तो कुछ लोग सूर्य की प्रतिमा बताते हैं। आगे ऊपर जाने पर एक ऐसी मूर्ति है जिसके तीन मुख और दस हाथ हैं। इसे लोग महाकाल भैरव कहते हैं। तीन मुख का अर्थ है—स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक और पाताल लोक। दस हाथ दसों दिशाओं के द्योतक हैं। यहाँ से थोड़ा ऊपर बढ़ने पर क्रमशः गणेश की एक छोटी मूर्ति और सरस्वती की मूर्ति है। काल भैरव की मूर्ति से ऊपर ले जानेवाली सीढ़ियों के बगल में चोल राजा का प्रस्तर अभिलेख है। इसी के पास पहाड़ में उत्कीर्ण दो मोटी रेखाएं दिखाई पड़ती हैं जो समानान्तर चलते हुए पूरे पहाड़ को घेरती हैं। इसे ही समुद्र मंथन के दौरान वासुकी नाग का चिह्न माना जाता है।

यहाँ से ऊपर का रास्ता अत्यंत खड़ा है, किंतु सीढ़ियों के कारण थोड़ी सुविधा मिलती है। या ऊपर जाने पर चोल राजा छत्रसेन का दूसरा शिलालेख है। इसके ऊपरी भाग में एक अष्टभुजी मूर्ति है जो सरस्वती की मानी जानी जाती है। यहाँ से थोड़ा ऊपर जाने पर पहाड़ दो भागों में बंटता है और दोनों भुजाएं नरसिंह गुफा मंदिर को जाती हैं। एक मार्ग सीताकुण्ड के पास होता हुआ गुफा मंदिर को जाता है और शंख कुण्ड के पास से गुजरता है। सीता कुण्ड पहाड़ के ऊपरी भाग के सभी कुण्डों में सबसे बड़ा है। शंखकुण्ड की आकृति शंख जैसी है और यह छोटा है। वस्तुतः यह दो चट्टानों के बीच एक दरार है जिसमें वर्षा का जल रहता है।

नरसिंह भगवान का गुफा मंदिर, सीता कुण्ड के तट पर है। इसे पहाड़ को काटकर बनाया गया है। इसमें मनुष्य तनकर खड़ा भी नहीं हो सकता। गुफा मंदिर के पास एक आश्रम और एक कुआँ भी है। लोक कथाओं के अनुसार दैत्यराज हिरण्यकश्यप अपने विष्णु भक्त पुत्र प्रह्लाद को हत्या के नीयत से मंदार पर्वत से ही नीचे फेंका करता था।

हिरण्यकश्यप के वध के लिए ही नारायण नरसिंह रूप में अवतरित हुए।

पहाड़ी के ऊपरी भाग में दो छोटे-छोटे मंदिर हैं, जिसमें से एक भगवान मधुसूदन का कहा जाता है। इस मंदिर में एक छोटा-सा गड्ढा जैसा भाग है। कहा जाता है कि छत्रसेन ने यहीं से मूर्ति उखाड़कर पापहरणी कुण्ड के पास स्थापित करवाई थी और फिर वहाँ से यह मूर्ति बौंसी ले जायी गयी। इस मंदिर में छह मानव पद चिह्न हैं जिसमें दो विष्णु, दो सरस्वती और दो लक्ष्मी के माने जाते हैं। इन मंदिरों से लगभग 90 हाथ की दूरी पर एक खोह में राख की राशि देखी जाती है जिसे सिद्ध योगियों का निवास बताया जाता है। दर्शनार्थी यहाँ की विभूति लगाकर आनंद पाते हैं। पर्वत के कई स्थानों पर भग्न-रूप में बौद्ध मूर्तियाँ छिपी हुई दिखलाई पड़ती हैं जो आक्रमणकारियों की निष्ठुरता को व्यक्त करती हैं। पहाड़ पर नाथ स्थान, कामधेन्वा मंदिर, शिव मंदिर, भगवती मंदिर और अन्य कई मंदिरों के भग्नावशेष हैं।

शिखर पर जैन धर्मावलंबियों के भी दो मंदिर हैं जिससे यह जैन तीर्थस्थल बन गया है। जैन मतानुसार उनके 12वें तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म चम्पानगरी में हुआ था और उन्होंने चम्पानगरी में ही तप और ज्ञान प्राप्त किया था। वासुपूज्य जी ने इसी मंदार पर्वत पर निर्वाण प्राप्त किया था।

विकास के आधुनिक कार्य

बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम के द्वारा मंदार पर्वत पर केबिन आकाशीय रज्जु मार्ग (रोपवे) का निर्माण सितम्बर 2017 में प्रारंभ कराया गया है। यह रोपवे राजगीर के बाद बिहार का दूसरा रोपवे होगा। इसमें चार व्यक्तियों की क्षमता वाले 20 केबिन होंगे जो 720 मीटर की दूरी 4 मिनट में तय करेंगे। सरकार को रोपवे निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराना चाहिए। रेलवे ने भी भागलपुर हावड़ा के बीच कविगुरु

एक्सप्रेस का परिचालन 2011 से शुरू किया हुआ है। भागलपुर से मंदार हिल/हंसडीहा सवारी गाड़ी भी एक अच्छा संपर्क है।

मंदार पर्वत के भ्रमण से यह साफ परिलक्षित होता है कि यह पर्वतीय क्षेत्र जहां एक ओर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और आध्यात्मिक एवं पौराणिक महत्व के कारण बार-बार अपनी ओर आकर्षित करता है, वहीं दूसरी ओर पर्यटन की अपार संभावनाएं समेटने के बावजूद सरकारी उपेक्षा और मंथर गति से चल रहे विकास कार्य मन को ठेस पहुंचाते हैं।

यह पर्यटन स्थल अपनी आय के माध्यम से बिहार एवं अंग क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में अपार वृद्धि एवं मजबूती की सकारात्मक संभावनाएं प्रस्तुत करता है। पूरे क्षेत्र का सम्यक रूप से सौंदर्यीकरण करवाया जाना चाहिए। पापहरणी सरोवर में सशुल्क नौकायन की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। मंदार हिल स्टेशन से मंदार पर्वत जाने के लिए सुगम व्यवस्था एवं ठहरने-खाने की व्यवस्था में समुचित सुधार कर इसके आकर्षण में चार चाँद लगाया जा सकता है।



(छायाकार राजू कुमार सिंह)

मंदार पर्वत का
विहंगम दृश्य



मनःस्थिति



के. एम. जयपुरियार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

आनंद, आवेश, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, लोभ, शोक, विषाद इत्यादि विभिन्न मानवीय मनःस्थितियाँ हैं जिसे हम सभी आये दिन अनुभव करते हैं। संसार में मानव जाति प्रायः सभी कर्म या तो इन मनःस्थिति के वश में होकर करते हैं अथवा अपने दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। परन्तु मनुष्य की तात्कालिक एक अलग पहचान उनके विशिष्ट मनःस्थिति के लिए किए गये कर्मों से ही होती है। क्योंकि जब हम आनंद के लिए या क्रोधवश अथवा ईर्ष्या के कारण या अहंकार के वश में होकर कोई कार्य करते हैं तो वह हमें उस समय एक अलग पहचान देती है।

परन्तु आनंद हो या आवेश, लोभ हो या द्वेष, हर्ष हो या शोक ये सभी देखने में तो मन की अलग-अलग स्थितियाँ परिलक्षित होती हैं पर वास्तव में ये मन की एक ही स्थिति है जो हमारे आस-पास घटित विभिन्न घटनाओं की परिणति है।

उदाहरण स्वरूप यदि हमें कुछ मनवांछित प्राप्त हो जाता है तो हम अपने आप को भूलकर उसे पाने के आनंद में अत्यंत हर्षित हो जाते हैं। उसी प्रकार अनायास ही हम कुछ खो जाते हैं तो अत्यंत दुःखी हो जाते और अपने आप को भूलकर उसके खोने के दुःख में शोकाकुल हो उठते हैं। ठीक उसी प्रकार यदि कुछ हमारे मन के अनुसार नहीं होता है तो हम क्रोधित होकर अपना आपा खो बैठते हैं। वैसे ही कुछ पाने के लिए लोभी हो जाते हैं परन्तु यह दूसरे को प्राप्त हो जाये तो उससे द्वेष कर बैठते हैं और तब हमारा ध्यान उसी वस्तु पर रहता है जिस कारण हमें लोभ या द्वेष हुआ था।

उपरोक्त वर्णित सभी स्थितियों में आपने अगर गौर किया तो एक बात सामान्य है, और वह है अपने आप को खो देना या स्वयं से हटकर किसी दूसरी ओर ध्यान केंद्रित कर लेना। परन्तु जब हम स्वयं पर केंद्रित होकर आत्मबोध की स्थिति में होते हैं तो ये सारी स्थितियाँ स्वयं ही समाप्त हो

जाती हैं। अर्थात् आत्मबोध की स्थिति में, संसार की बाह्य स्थिति में हमारे मन को न तो आनंदित करती है, न क्रोधित बनाती हैं, न लोभ का शिकार बनाती हैं, और न ही ईर्ष्यालु होने देती है। अर्थात् आत्मबोध हमें द्रष्टा बनाती है जबकि अनात्मबोध हमें परिस्थितिजन्य कर्ता के रूप में संसार में एक दृश्य बनाती है।

इस प्रकार वास्तव में हमारी दो ही मनःस्थितियाँ हैं— एक आत्मबोध तथा दूसरा अनात्मबोध की स्थिति। जहाँ आत्मबोध हमें आध्यात्मिक शांति प्रदान कराती है वहीं अनात्मबोध एक सांसारिक कर्ता बनाती है।

परन्तु अब प्रश्न है कि इन दोनों में कौन-सी परिस्थिति हमारे लिए उत्तम है। तो हमें इससे पहले समझना होगा कि हमें क्या चाहिए। हम सभी जानते हैं कि हमें आनन्द और शांति चाहिए क्योंकि क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि दुर्गुण हैं जबकि प्रेम, शांति, हर्ष ये सभी सद्गुण हैं। तो फिर हमें क्या करना होगा ताकि हम सदैव आनंदित रहें और हम आवेशित न हों।

इसका एक ही हल है कि हम अपने मनःस्थिति को इच्छा एवं आवश्यकतानुसार परिवर्तित करते रहें। अर्थात् आत्मबोध से अनात्मबोध एवं अनात्मबोध से आत्मबोध की ओर इच्छा एवं आवश्यकतानुसार निरंतर परिवर्तित होते रहना।

इसी प्रकार आनंद की प्राप्ति के लिए हमें अनात्मबोध होना पड़ेगा जबकि क्रोध से मुक्ति के लिए आत्मबोध बनना पड़ेगा। उदाहरण के लिए—यदि कोई खिलाड़ी खेल में जीतता है तो वह अपने-आप को भूलकर बिल्कुल एक अबोध बालक की तरह आनंद के सागर में गोते लगा रहा होता है। अतः आनन्द के लिए उसने स्वयं को भूला दिया और यदि आप अगर किसी बात से आवेशित हो रहे हों तो और उसी

क्षण यदि अपना आत्मनिरीक्षण कर लें और एक योगी की तरह आत्मबोधी होकर मात्र स्वयं का विचार करें और मात्र यह अनुभव करें कि आप क्रोधित हो रहे हैं तो आपका अनुभव होगा कि आपका क्रोध स्वयं ही समाप्त हो रहा है। अर्थात् जब हमें भक्ति और आनंद चाहिए तो अनात्मबोधी होकर एक अबोधकर्ता होना पड़ेगा परन्तु क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि दुर्गुणों से बचने के लिए आत्मबोधी होकर द्रष्टा भाव से स्वयं का चिंतन करना पड़ेगा क्योंकि आत्मबोध आपको नकारात्मक गुणों से बचाकर आपको शांति प्रदान करता है वहीं सही और आवश्यक अनात्मबोध आपको हर्षित कराता है।

एक व्यक्ति का अनात्मबोधी अथवा आत्मबोधी होना दो तत्वों पर निर्भर है—माया और ब्रह्म। कोई व्यक्ति इस

सांसारिक माया के वश में होकर ही अनात्मबोधी होता है जबकि मनुष्य के अंदर का ब्रह्म तत्व उसे आत्मबोधी होने के लिए जागरूक कराता है।

हम चाहे सोते हुए स्वप्न देख रहे हों अथवा जागते हुए आनन्द ले रहे हों या क्रन्दन कर रहे हों, हम चाहे क्रोध के वश में हों या शोकाकुल अवस्था में, हम चाहे कुछ पाने के लालायित हो रहे हों या मोह में पड़े हों... इन सभी अवस्थाओं में हम संसार के माया के वश में होकर वास्तव में स्वयं से विमुख होकर अनात्मबोध की अवस्था में होते हैं।

अर्थात् आत्मबोध एक शून्य की स्थिति है जिसमें आप सांसारिक माया से परे होते हैं। परिणामतः बाह्य परिस्थितियाँ आप पर निष्प्रभावी हो जाती हैं परन्तु अनात्मबोध की स्थिति में हम पूर्णतः इन परिस्थितियों के वश में होते हैं।



प्रशासनिक शब्दावली

Letter of allotment	आबंटन-पत्र
Letter of authority	प्राधिकार-पत्र
Letter of Credit	साख-पत्र
Letter of guarantee	गारंटी-पत्र
Letter of intent	आशय-पत्र

ऑरव का ऑपरेशन



मनोज कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

रमेश बाबू को सेवानिवृत्त हुए दस वर्ष बीत गये थे। जिन्दगी के 70 वर्ष कैसे बीत गये उन्हें तनिक भी पता नहीं चला। हाई स्कूल में मास्टरी करते-करते कब सेवानिवृत्ति के दिन आ गये उन्हें अहसास भी नहीं हुआ।

दो बेटों को पढ़ा-लिखा कर कम्प्यूटर इंजीनियर बना दिए। दोनों का फिर विवाह कर दिए। विवाहों में समधी से दहेज नहीं मांगा। जो समधी ने बेटे-बहू को दिया उसे स्वीकार किया।

रमेश बाबू जब बच्चों को पढ़ते थे तो सिखाते थे—शादी, विवाह में दहेज नहीं मांगना चाहिए। बड़े-बुजुर्गों का सम्मान और सेवा करनी चाहिए।

रमेश बाबू का बड़ा बेटा एक मल्टीनेशनल कम्पनी में अमेरिका चला गया था, छोटा वाला पूना में एक बड़ी कम्पनी में था। दोनों को लाखों का पैकेज। रमेश बाबू पटना में पत्नी के साथ सुखपूर्वक रह रहे थे। किसी चीज की कमी नहीं थी। दिन बितते गए। गंगा में खूब पानी बहता गया। जब तक दोनों का समांग चलता रहा, दोनों पति-पत्नी को कोई दुख नहीं हुआ। आखिर सत्तर वर्ष होते-होते बुढ़ापा का अहसास होने लगा दोनों को, वैसे बुढ़ापा तो दुःख का ही शायद दूसरा नाम है। सबसे बड़ा दुख तो यही था घर में मियां-बीबी के अलावे बोलने-बतियाने वाला कोई नहीं था। आखिर दोनों कितना बात करते।

रमेश बाबू के दोनों आँखों में मोतियाबिंद आ चुका था। दोनों आँखों की रौशनी कम हो रही थी। दो साल से ऑपरेशन टलता जा रहा था क्योंकि दोनों बेटों को फुर्सत नहीं मिल पा रहा था। रमेश बाबू की पत्नी को भी मोतियाबिंद आँखों में

आ गया था। एक दिन रमेश बाबू ने दोनों बेटों को फोन पर कहा कि तुम्हारी मां को भी मोतियाबिंद आँखों में आ गया है। तुमलोग जल्दी आ जाओ तो ऑपरेशन हो जाये, क्योंकि ऑपरेशन के बाद एक महीना तो चाहिए ही देखभाल के लिए। इसलिए बहू और पोते को भी लेते आना। ऐसे भी बहुत दिन हो गये हैं देखे हुए। छोटे बेटे ने कहा—कंपनी के प्रोजेक्ट को पूरा करके छुट्टी मिलते ही आऊँगा। बात ये भी थी कि छोटा का बेटा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ रहा था। हर महीने टेस्ट और पैरेंट्स मिटींग। बड़े बेटे का अमेरिका से आना-जाना तो लाखों का खर्चा था। यही सब कारण था कि रमेश बाबू के आँखों का ऑपरेशन टल रहा था।

जब छोटका बेटा पूना से नहीं आया तब रमेश बाबू एक पड़ोसी को साथ लेकर अस्पताल में ऑपरेशन करवा आये। घर आने के बाद दोनों बेटे को फोन करके सूचना दे दिए। दोनों बेटों ने पिता को आश्वासित किया कि आप चिंता न कीजिए। पैसे की दिक्कत होगी तो कहिएगा पैसा भेज देंगे। डाक्टर ने जैसे-जैसे दवा लेने को कहा है, लेते रहिएगा। ऑपरेशन के बाद रोज फोन आता और पिता का हाल दोनों पूछते। रमेश बाबू को अच्छा पेंशन मिलता था। उनकी तो एक ही चाह थी कि ऑपरेशन के समय बेटा-पुतोह साथ होते। लेकिन मन का क्या ? अब पहले वाला समय तो है नहीं, सभी लोग अपने निजी जीवन में खूब व्यस्त हो गए हैं।

रमेश बाबू कुछ महीने बाद दूसरे आँख का भी ऑपरेशन करवा लिये, फिर पत्नी का भी। पर इस बार दोनों बेटा को फोन से सूचना नहीं दी। उनका सोचना था कि कोई बेटा तो आयेगा नहीं, सिर्फ कहेगा कि चिन्ता न कीजियेगा, दिक्कत होगी तो पैसा भेज देंगे।



साम्भवती भास्कर

पर्यावरण गीत

बिजली के इस तार पे बैठी
चिड़िया सोच रही है ये
सपने में भी कब सोचा था
जंगल काटा जायेगा ?
हरे भरे धरती के आँचल
बस्ती में खो जायेंगे
नदिया नाले झील सरोवर
सब सपने हो जायेंगे
शहर बसाने की जिद में
ये पोखर पाटा जायेगा
सपने में भी कब सोचा था
जंगल काटा जायेगा ?
अपने घर की चाह में हमको
बेघर करने वाले लोग
जाने कब इक बोर्ड लगा दें
पल-पल छलने वाले लोग
ये जंगल बस्ती होगा
ऐलान ये साटा जायेगा

सपने में भी कब सोचा था
जंगल काटा जायेगा ?
सरकारी बंगलों में बैठे
राज भवन गढ़ने वालों
धरती छोड़ के नील गगन पर
सपनों में चढ़ने वालों
कोई दिन तो आयेगा
जब दर्द उपाटा जायेगा
सपने में भी कब सोचा था
जंगल काटा जायेगा ?
पुरुष और प्रकृति का संगम
ही जीवन की धारा है
जंगल से मंगल होगा
सदियों का यही इशारा होगा
तुम क्या जानो लाभ-लोभ में
कितना घाटा जायेगा
सपने में भी कब सोचा था
जंगल काटा जायेगा ?

द्वारा-भुवन भास्कर
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी





विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

हमारा धर्म, हमारा कर्म

हमारा धर्म हो सेवा,
हमारा कर्म हो सेवा,
लेखापरीक्षा हमारा धर्म,
लेखापरीक्षा हमारा कर्म।

सरकारी निधि के उपयोग को,
एक दल के साथ जाँच करते हैं।
निधि की गड़बड़ी को रिपोर्ट के रूप में,
सरकार के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

सी. ए. जी. एक्ट 1971 ढाल हमारी,
नियम और अनुच्छेद हमारी तलवार।
सरकारी निधि का दुरुपयोग करने वालों,
सावधान, होशियार और खबरदार।

देश सेवा में लगे रहते हरदम,
घर परिवार बच्चों को छोड़कर।
जाता है दल लेखापरीक्षा कार्य पर,
व्यर्थ न मेहनत, डटा रहता विश्वास पर।

कोई सरकारी विभाग न छूट पाये,
एक भी गड़बड़ी करने वाला बच न पाये।
सही और सच्ची रिपोर्ट प्रस्तुत करते हम,
लेखापरीक्षा हमारा धर्म
लेखापरीक्षा हमारा कर्म।

देश सुरक्षा करते हैं सैनिक,
निधि की सुरक्षा करते लेखापरीक्षक।
खतरों और जोखिम भरा है ये काम,
परन्तु हिम्मत और हौसला से करते काम।

लेखापरीक्षा के दम पर,
एक नव भारत का निर्माण करेंगे।
जिसमें ना हो कोई गड़बड़ी, हो भरपूर सच्चाई,
चलो हम सब मिलकर एक नया इतिहास बनाये।

हो खुशहाल हमारा हर विभाग,
ऐसा ही कुछ काम करेंगे।
है गर्व हमें अपने लेखापरीक्षा पर,
कभी न आँच आने देंगे अपने विभाग पर।

एक नई पहचान बनाये अपनी,
सबके मन को भाये हमारी सेवा।
आओ हम सब मिलकर शान बढ़ायें,
अपने विभाग का मान सम्मान बढ़ायें।

देश सेवा, ईमानदारी, सच्चाई, कर्तव्यनिष्ठा को,
करते हैं हम दिल से अभिनन्दन।
तिरंगे को करते नमन,
करते हैं हम तुझे सलाम,
लेखापरीक्षा हमारा धर्म
लेखापरीक्षा हमारा कर्म।



भुवन भास्कर
वरिय लेखापरीक्षा अधिकारी

लॉक डाउन का लॉक अप

24 मार्च, 2020 की रात में जैसे ही तीन हफ्ते के लॉक डाउन की घोषणा हुई, अजीब से सुकून सह उत्तेजना की अनुभूति हुई। काम से आराम तो मिलेगा ही, नजरबंदी का शौक भी पूरा हो जाएगा। इतने बड़े कभी हुए नहीं कि सरकार को मुझे नजरबंद करने की जरूरत महसूस हो। दरअसल पूरी जिंदगी ही ऐसी बुजदिली में गुजरी की पत्नी के अतिरिक्त बाकी किसी को मुझसे खतरा ही नहीं महसूस हुआ। बहुत पहले जेल में बंद किसी पारिवारिक मित्र से मिलने जाना हुआ था, तब कुछ दिन अंदर रहने की लालसा पैदा हुई थी। लेकिन मैं जानता था कि पुलिस मुझे इस योग्य नहीं समझेगी। मित्र से कारागार में मिलकर आया तो कुछ उम्मीद जगी थी। दरअसल, मित्र महोदय मुझसे भी बड़े गाय थे। उन पर भी पुलिस की कृपा हो सकती है, तो क्या पता मुझपर भी हो जाए।

अपनी छाती कभी इतनी चौड़ी नहीं हुई कि पुलिस-प्रशासन के सामने ठोंक सकूँ, नजरें भी इतनी तीखी नहीं हुई कि नजरें मिला सकूँ। सो, अंदी-बंदी एक कल्पना ही रह गई। लॉक-अप भी नजदीक से देखने को नहीं मिला। एक बार छोटी-सी सरकारी नौकरी लगी तो पुलिस सत्यापन कराने थाने जाना पड़ा। तब तक मुझे यह नहीं मालूम था कि पुलिस चरित्र का सत्यापन भी करती है, या चरित्र प्रमाण पत्र भी देती है। पढ़ाई में तो यही बताया गया था कि चरित्र का निर्माण संस्कारों से होता है। चरित्र के सबसे बड़े निर्माता गुरुजन होते हैं। चरित्र-निर्माण के निमित्त रामायण-महाभारत की कहानियाँ पढ़ाई गई थीं। यह तो चरित्र सत्यापन के समय पता लगा कि इन सारे चरित्र निर्माताओं के पास केवल चरित्र बनाने का अधिकार है, सत्यापन वाली मुहर तो केवल पुलिस

के पास है। सरकारी चिट्ठी हाथ में लेकर गया तो उन्होंने अपने तरीके से चरित्र का प्रमाणन कर दिया।

अकस्मात् कोरोना आया और लॉक डाउन के अवसर ने सौभाग्य प्रदान कर दिया अपने घर में नजरबंद होने का। नजरबंद बड़े-बड़े लोग होते हैं और अपने बड़े होने का अहसास हुआ। यह जानकार अच्छा लगा कि मेरी भी जान की चिंता सरकार को है। यह बात अलग है कि मेरी जैसी जान वाले बहुतेरे हैं। सिर्फ एक सप्ताह का राशन-आलू जमा कर पाया था। पत्नी ने सामने वाले शर्मा जी का खलिहान भरा देखकर ताना मारा कि आपके वश में महीने भर का राशन जमा करना भी नहीं। लेकिन मुझे देश के शासन-प्रशासन पर भरोसा था, उसे नहीं।

लॉक डाउन यानि अपनी गृह कैद का पहला दिन गुजरा। पहली बार इस तरह की छुट्टी मिली थी, चैन की नींद सोया और बाकी समय में पता किया मेरी टी. वी. में कौन-कौन से चैनल आते हैं। रात में फेसबुक खोला, तो बहुत कुछ भरा पड़ा था।

यहीं से मेरी नजरबंदी का सुरूर उतर गया। दिन भर मजे में इंटरनेट इस्तेमाल कर रहा हूँ। यू-ट्यूब, फेसबुक और व्हाट्सएप को कठपुतली की तरह चला रहा हूँ। बिना वजह गूगल खंगाले जा रहा हूँ। तमाम सिने-तारिकाओं के सुंदर-सुंदर चित्र देख चुका हूँ। घंटे-दो घंटे पर पत्नी चाय दे रही है। उस पर अपने लेखक होने का झूठा तिलिस्म डाल रखा हूँ। असली नजरबंदी तो वही जिसमें इंटरनेट, मोबाइल और टी. वी. से वंचित कर दिया जाए। इसके बिना तो आज की तारीख में स्वर्ग भी नरक से कम नहीं।

जब मर्जी जिस तिस को फोन मिलाकर उसका टाइम खोटा कर रहा हूँ। न जाने कितने बंधु अपने घरों में झाड़ू-पोछा और बर्तन के सजायाफ्ता हैं। कुछ के फोन नम्बर तो कब्रों से खोद-खोदकर निकाला। खाली बैठा था तो सारे रिश्ते याद आ रहे थे। कुछ हितैषियों को फोन मिलाया तो पता चला कि वे दो-तीन साल पहले ही खुदा को प्यारे हो गए थे। लानतें और जलालतें भी झेलनी पड़ीं। बड़ा दुःख हुआ, जब आदमी मर जाता है तो उसका मोबाइल क्यों जिंदा रहता है ? न जिंदा होता न मुझे मुँह की खानी पड़ती!

अब जहाँ इतने मजे हों उसे नजरबंदी कैसे समझूँ ? एक बार मन हुआ कि बाहर निकल जाऊँ, कोई-न-कोई पुलिस वाला असली लॉक में पहुँचा देगा। लेकिन टी. वी. और यू-ट्यूब चैनल की खबरें देखकर मन उत्साहित नहीं हुआ। इस अफरा-तफरी और कोरोना सफरी में थाने वाले भी डर रहे थे, सो, पिछवाड़े मुहर लगाकर वापस कर दे रहे थे और अपने पास इतनी हिम्मत हुई नहीं।

गृहकैद के कुछ नुकसान भी दिखने लगे थे। सप्ताह भर से टिक्की-गोलगप्पे न मिलने से पत्नी चिड़चिड़ी हो गयी। जैसा मेरा स्वभाव और टिकाव था, उसने सपने में भी

नहीं सोचा होगा कि एक दिन ऐसा आएगा जब यह आदमी घर में इतना टिकेगा। अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती। मोहल्लेवासियों से उसकी मुलाकात नहीं हो रही थी, इसलिए दुनिया भर की निंदा और शिकायतें मुझे ही सुननी पड़ रही थी क्योंकि श्रोता तो एकमात्र मैं ही था। वैसे समस्या इधर भी थी। कार्यालयी मित्रों का साथ छूट जाने से मुझे भी निंदा का अवसर नहीं मिल रहा था। सो, तबीयत कुछ खराब रहने लगी और उसका असर दिमाग तक जाने लगा।

नजरबंदी की खुशियाँ-अनुभूतियाँ जाती रहीं। शाम को मोहल्ले की गली से बाहर निकला, तभी दो पुलिसवाले आते दिखे तो कुछ आशा लगी। लेकिन वे चेहरे का एक्सरे करते हुए निकल लिए। चेहरों की जितनी पहचान पुलिस वालों को होती है, उतनी किसी को नहीं होती। उनकी नजर में मैं फिर निरापद निर्जीव यानी शरीफ निकला। समझ नहीं आया कि फिर मैं मित्रों और रिश्तेदारों को इतना वाहियात और खतरनाक क्यों लगता हूँ ?

वैसे यह समय ऐसा है कि लोग युगों-युगों तक कन्फ्यूज रहेंगे कि इस दौरान से खुश थे या दुखी!





अरुण कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

बदलता समय

पैसे गाड़ियों के बीच, खेत छूटा, खलिहान छूटा।

पीपल की वो छाँव छूटी, गाँव का मंजर छूटा।।

मौज-मस्ती में खेला खाया, गीत बचपन का भा गया।

अब उन गीतों के शब्द भी खोने लगा हूँ।।

टूटे हुए स्वप्नों के बीज अब मैं, होने लगा हूँ।

आज दोस्तों में अब वो, नेह नहीं दिखता।।

प्यार नहीं दिखता, स्नेह नहीं दिखता।

तेरा है या मेरा है, पहले ये ना सोचता था।।

दोस्तों के घर में ही खुद के घर को, खोजता था।

घर छोटे हो रहे हैं, छत का पता नहीं।।

ए. सी. कमरों के बीच अब आसमाँ सजता नहीं।

आस-पास कौन है, क्या है ये पता नहीं।।

भीड़ है, लोग हैं पर खुद का पता नहीं।

सोंचता हूँ एक बार फिर मैं लौट आऊँ।

गाऊँ, खेलूँ, तितलियों के देश में, हो के आऊँ।

खेतों की क्यारियों में, ममता की लोरियों में खो जाऊँ।

जुगनू से बतिआऊँ, गोरेया के घर सजाऊँ।

एक बार फिर मैं टूटे स्वप्नों को सजाऊँ।

आँखें भर आती हैं, माँ जब याद आती है।

बाबा याद आते हैं, फिर से वो बुलाते हैं।।

ऐसा उलझा हूँ अर्थतंत्र में कि अब शायद न जा पाऊँगा।

टूटे हुए स्वप्नों को अब जोड़ न पाऊँगा।



ऑडिटर



पी. सी. सिन्हा
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

ऑडिट करना है जिसका काम
ऑडिटर होता है उसका पदनाम

ऑफिस-ऑफिस घूमना इनका है काम
आया है अब करेगा बहुत परेशान

ऊपर से सभी करते इन्हें सलाम
अंदर से भन्नाते सुनकर ही नाम

पाई -पाई का मांगेगा हिसाब
चुभता हुआ करता यह सवाल

पेंसिल ही है इसका हथियार
गलती पर लगाता है निशान

नजर भी इसकी होती है कमाल
गलती पर ही पड़ती है निगाह

पैरा का लगा देता है अम्बार
नियमों का रखता बहुत ही ज्ञान

चोरी गबन पर लगाता है लगाम
लोक निधि का रखता बहुत ध्यान

काम नहीं है इसका थोड़ा भी आसान
रात दिन करता है यह काम

केडी से छूटती नहीं जान
वार्षिक प्रतिवेदन है इसकी शान

पीएसी में विभाग रहता परेशान
पर जीवन नहीं इसका आसान

परिवार पर एकदम न देता ध्यान
यात्रा में समय बीतता है तमाम

रहना खाना है होटल के नाम
एक झोले में होता इनका संसार

पर झेलते हुए ये कष्ट तमाम
गरीबों के निधि का रखते ख्याल

चोरी गबन पर उठाते ये सवाल
दोषी को कराते सजा का प्रावधान

लाभार्थियों को दिलाते हैं ये लाभ
इसलिए वाच डॉग है इनका नाम।





श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दो कविताएँ

पर निकले तो

पर निकले तो
उड़ा लेकर हौसला
छोड़ उसने
वह पुराना घोंसला
है चाहत छूने की क्षितिज को
नीला अम्बर पार कर जाने को
निकला है
कर वादा लौटने का

आँखों में लिए सूनापन
कहता है पुराना घोंसला
मत कर वादा लौटने का
अब इस जर्जर काया में
इंतजार का
कहाँ रहा हौसला ।



दुपट्टा

जो दिखता है
वही लिखता हूँ
चाहता हूँ लिखूँ कुछ
उड़ती चुनरी पर
लहराते दुपट्टे पर
चाहता हूँ कैद करना
अपनी लेखनी से
उसकी नजाकत को ।

दिख भी जाता है
सड़कों पर अक्सर
दो पहिया वाहनों के पीछे
दुपट्टा जैसा कुछ
कसा मिलता है पूरे मुख पर
सिर्फ दिखती है आँखें
और लदा रहता है
सम्पूर्ण बदन
किसी की पीठ पर
अब न वह लहराता है
न पड़ता है
पहले की तरह,
चाहता हूँ लिखूँ
उसकी नजाकत को
पर कैसे लिखूँ
वर्तमान को
अतीत की तरह।



शिवशंकर राय
वरीय लेखापरीक्षक

वाल्मिकी नेशनल पार्क

अगर आप प्रकृति, वन्य जीवन को जानने, नजदीक से देखने और प्रकृति का आनंद लेना चाहते हों तो हर प्रकृति पसंद व्यक्ति को बिहार में स्थित वाल्मिकी नेशनल पार्क अवश्य आना चाहिए क्योंकि यहां प्रकृति का हरेक रंग मौजूद है।

बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले में स्थित लगभग 880 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैला बिहार का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है जो कि नेपाल के राजकीय चितवन नेशनल पार्क से सटा हुआ है। यह हिमालय के तराई की तलहटी में पर्वतमाला की चट्टानों, घाटियों एवं नदियों के साथ-साथ शानदार प्राकृतिक वन्यजीव से भरा-पड़ा अभ्यारण्य है। यहां 1994 में प्रोजेक्ट टाइगर योजना के तहत बाघों के संरक्षण का कार्य प्रारंभ किया गया था।

भारत के वनस्पति सर्वेक्षण रिपोर्ट, 1998 के अनुसार यहां के जंगलों को सात प्रकार के वनों में विभाजित किया गया था जिनमें 84 प्रजातियों के पेड़, 32 प्रकार की झाड़ियों और 8 प्रकार की जड़ी-बुटियों की भरमार थी। यहां की प्रमुख वृक्षों में साल, रोजवुड, सागौन, सेमल, चीड़, शीशम और बांस प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त खैर, जामुन, ट्रिविया भी बहुतायत में हैं।

जूलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1998 के अनुसार 53 स्तनधारियों, 145 पक्षियों, 26 सरीसृप वर्ग और 13 उभयचरों वाला शानदार अभ्यारण्य है। इसके अलावे जंगली सूअर, भालू, मोर, हिरण, सांभर, नीलगाय, चीतल, एकसिंगी गैंडा, हौग डीयर, हाइना, चीता, जंगली भैंसा, बाघ, अजगर, मगरमच्छ इत्यादि वन्यजीवों की भी अच्छी खासी संख्या है। इस समय टाइगर रिजर्व में बाघों की संख्या 35 से अधिक हो गई है।

वाल्मिकी नेशनल पार्क में पन्डई, मसान, गंडक आदि नदियां भी पड़ती हैं। इन नदियों में बापसा, रोहु, सोन्हा, सिंघी आदि मछलियां भी पाई जाती हैं।

ऐसा कहा जाता है कि इस उद्यान में महर्षि वाल्मिकी का वह आश्रम भी था जहाँ श्रीराम जी के द्वारा त्याग किए जाने के बाद देवी सीता ने आश्रय लिया था। माता सीता ने यहीं अपने पुत्रों 'लव' एवं 'कुश' को जन्म दिया था। इसी आश्रम में महर्षि वाल्मिकी ने 'रामायण' महाकाव्य की रचना की थी। यहां बेतिया राज द्वारा निर्मित शिव-पार्वती मंदिर भी दर्शनीय है।

हाल के वर्षों में बिहार सरकार ने इको टूरिज्म को बढ़ावा देने हेतु वाल्मिकी नेशनल पार्क के लिए कई योजनाएँ लागू की हैं। यथा—

- घने जंगलों में हाथी की सवारी
- जिप्सी, ई-रिक्शा व साईकिल से जंगल सफारी
- गंडक नदी में राफ्टिंग का आनंद
- मेडिटेशन सेंटर एवं योग केन्द्र
- रिसोर्ट वाल्मिकी विहार में लोक कलाओं एवं संस्कृति की झांकियाँ

वाल्मिकी नेशनल पार्क बिहार की राजधानी पटना से 275 किमी., मुजफ्फरपुर से 200 किमी. तथा बेतिया से करीब 80 किमी. की दूरी पर है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से इसकी दूरी 125 किमी. है। देश के सभी प्रमुख शहरों से पटना, मुजफ्फरपुर तथा बेतिया रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है।

इस तरह से वाल्मिकी नेशनल पार्क सिर्फ बिहार का ही नहीं बल्कि भारत का प्राकृतिक संपदा को समेटे एक अमूल्य धरोहर है।



सतीश चन्द्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शेयर बाजार - रोचक तथ्य और बारीकियाँ

बहुत से लोग व्यवसाय तो करना चाहते हैं, लेकिन व्यवसाय के लिए प्रयाप्त आधारभूत संरचना, बड़ी पूंजी/संसाधन एवं अन्य औपचारिकताओं को पूरा नहीं कर पाते हैं। वैसे लोगों के लिए शेयर बाजार में निवेश एक बेहतर और अच्छा विकल्प हो सकता है। वैसे तो बाजार में निवेश के बहुत सारे विकल्प मौजूद हैं, (जैसे फिक्स डिपोजिट, पी.पी.एफ., सोना, जीवन बीमा, राष्ट्रीय बचत पत्र, नेशनल पेंशन योजना, युनिट लिंकड इंश्योरेंस प्लान, इक्विटी लिंकड सेविंग्स स्कीम, म्यूचुअल फंड) मगर, शेयर बाजार में निवेश हमेशा से आकर्षक रहा है।

वर्तमान समय में शेयर बाजार में निवेश की प्रक्रिया बहुत ही आसान हो गई है इसके लिए सेविंग बैंक एकाउंट, डीमैट अकाउंट और ट्रेडिंग एकाउंट होने चाहिए। डीमैट और ट्रेडिंग एकाउंट सेबी से रजिस्टर्ड ब्रोकर द्वारा होने चाहिए जो बम्बई स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में ट्रेड करते हों। आजकल बहुत सारे वित्तीय संस्थान तीनों एकाउंट एक साथ (3 in one) की सुविधा भी उपलब्ध कराते हैं।

शेयर बाजार में निवेश के दो प्रकार हैं:-

1. प्राथमिक बाजार (Primary Market).—इसे वर्तमान समय में ASBA (Application Supported by Blocked Amount) द्वारा ऑनलाईन बैंक खाता से आवेदन किया जाता है। अच्छे आधारभूत संरचना वाले कम्पनियों के आई.पी.ओ. में आवेदन कर लाभ कमाया जा सकता है।

2. द्वितीयक बाजार (Secondary Market).—शेयर बाजार में निवेश जोखिम भरा होता है।

यहां लाभ की संभावना अन्य निवेश की तुलना में बहुत अधिक होता है, जिसे Risk Reward Ratio कहते हैं। जिस कारण यहां निवेश में कड़ी अनुशासन की भी आवश्यकता है। अब सवाल उठता है कि शेयर बाजार में कितना निवेश किया जाए। शेयर बाजार में निवेश का एक सामान्य सिद्धांत है कि यहाँ अपनी कुल आय/पूँजी का 10 से 15 प्रतिशत तक ही निवेश करना चाहिए। जिसे 8 से 10 कम्पनियों के शेयरों में विभाजित कर निवेश करना चाहिए।

हमारे देश में 5000 से अधिक सूचीबद्ध कंपनियां हैं और यह जरूरी नहीं कि हम सभी कम्पनियों के शेयरों में ट्रेड करें। किसी भी निवेशक को विभिन्न सेक्टरों के अच्छे प्रदर्शन करने वाले 15 से 20 कम्पनियों के शेयरों का चुनाव कर पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए और लंबी अवधि के लिए निवेशित रहना चाहिए और कभी भी पूरा पैसा एक बार नहीं बल्कि टुकड़ों में सिस्टमेटिक इनवैस्टमेंट प्लान (SIP) में निवेश करना चाहिए। शेयर में निवेश एक निरंतर सीखने की प्रक्रिया है। अनुभव के साथ सही शेयर का चुनाव आसान हो जाता है। शेयर खरीदने पर समय-समय पर समीक्षा करना चाहिए एवं निर्धारित लक्ष्य प्राप्त होने पर निकल जाना चाहिए। शेयर बाजार कभी समाप्त नहीं होने वाला बाजार है, जब तक अर्थव्यवस्था रहेगी शेयर बाजार रहेगा। शेयर बाजार किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का आईना होता है।

शेयर बाजार में कठिन परिश्रम से कमाया धन लगा होता है, अतः किसी के कहने-सुनने पर शेयर में निवेश नहीं करना चाहिए, बल्कि स्वयं के गहन विश्लेषण के आधार पर

शेयर में निवेश करने का निर्णय करना चाहिए। इस बाजार के लिए धन, ध्यान और धैर्य का होना आवश्यक है। कम्पनी के वित्तीय स्थिति Profit & Loss Accounts, Balance Sheet, Financial ratio और Fundamentals को भी ध्यान में रखना चाहिए। यदि Fundamentals अच्छे हो तो धैर्य नहीं खोना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि, किसी शेयर को देखने पर मुंह में पानी आता है और खरीदने पर आंख में पानी आता है।

किसी भी शेयर से भावनात्मक संबंध नहीं रखते हुए, उद्देश्य लाभ कमाना होना चाहिए। जब किसी खास शेयर के मूल्य में अप्रत्याशित रूप से उतार-चढ़ाव हो और आप उसमें ट्रेड करना चाह रहे हों तो कठोर स्टॉप लॉस के साथ निवेश करना चाहिए। खतरों के खिलाड़ी नहीं बनना चाहिए वैसे ही जैसे गिरते हुए चाकू को नहीं पकड़ना चाहिए।

आमतौर पर बाजार में किसी भी सामान के मूल्य घटने पर खरीदार बढ़ते हैं और मूल्य बढ़ने पर खरीदार घटते हैं। पर यहां ऐसा नहीं होता है। जितनी तेजी से शेयर का मूल्य बढ़ता है, उतनी ही तेजी से खरीदार बढ़ते हैं और मूल्य घटने पर

खरीदार घटते हैं या भाग जाते हैं यानी सामान्य बाजार के ठीक विपरीत।

इसके अलावा इक्विटी डेरिवेटिव ट्रेडिंग भी होता है जैसे वॉयदा, फ्यूचर और ऑप्शन (F & O) ट्रेडिंग है। ऑप्शन वर्तमान समय में वित्तीय बाजार का सबसे पसंदीदा डेरिवेटिव्स है। इसमें नफा-नुकसान की सीमा नहीं होती है। गहन अध्ययन के बिना ऑप्शन ट्रेडिंग नहीं करना चाहिए।

सोच समझकर किया गया निवेश आपको काफी ऊंचाई तक पहुंचा सकता है। यानी जानकार बनिए, जागरूक रहिए और पैसा कमाइए। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी एक विलक्षण प्रतिभा होती है जिसका वह उपयोग करता है। जिसके उदाहरण है बर्कशायर हैथवे के वारेन बफेट जो विश्व के चौथे सबसे धनी व्यक्ति है एवं भारत के राकेश झुनझुनवाला (भारत के वारेन बफेट)।

इसके बावजूद भी यदि कोई व्यक्ति शेयर बाजार के जोखिम (Risk) नहीं लेना चाहते हैं, उनके लिए निवेश के अन्य साधन मौजूद हैं।





पवन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

माँ

सबसे प्यारी होती है माँ
सबसे न्यारी होती है माँ।
माँ से अच्छा कोई नाम नहीं,
माँ से अच्छा किसी का काम नहीं।

माँ न होती मैं न होता
आप ना होते ना कोई और होता
माँ की करो हमेशा पूजा
इससे बढ़कर कोई ना दूजा।

माँ ने हमें चलना सिखाया
पढ़ना, लिखना और उठना सिखाया।
इस धरती को ईश्वर ने बनाया,
पर इस धरती पर हमें माँ ने लाया

माँ तो है भगवान से बड़ी,
उसकी चरणों में पूरी दुनिया पड़ी।
माँ को है दिल से प्रणाम,
इनके आशीर्वाद से हो जाते सारे काम।



अमृता सिंह
वरीय लेखापरीक्षक

बिटिया

बिटिया जब से तू मेरे घर आयी है,
घर में अजब सी रोशनी छायी है।

मेरी दुनिया को अपनी किलकारियों से तुम
गुलजार हो रखती,
सारे दुख-तनाव को तुम हरती रहती।
जब-जब आकर मेरा दामन हो थामती,
मेरे मन तरंग में सुखद बिजली है कौंधती।

माँ के सुख का एहसास कराया है,
इस प्यारी दुनिया में और प्यार बसाया है।
मेरी परछाई, मेरी छाया, मेरा आत्म गौरव है तू,
जन्म देकर तुझको, धन्य समझती खुद को,

तुझको सर्वोत्तम परवरिश दूँ
सफल माँ का गौरव हो मुझको।
जब तू जीवन में तरक्की करे, पाकर मेरी परवरिश,
पुनः हो मन प्रफुल्लित, हृदय में हो खुशी की बारिश।
धन्य हुई मैं, जो ईश्वर ने दिया तुझ सा जैसा
धन्यवाद है कोटि-कोटि उनका, मन है समर्पण सा।





रामप्रसाद प्रसाद
सेवानिवृत्त वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

मान करो, मान करो

कैसी दशा आज देश में हुई है
जहां सुरक्षित नहीं बेटियाँ हमारी
प्रतिदिन ईज्जत गंवाई है

इतराते थे हर कदम पर हम
सोने की चिड़िया भारत हमारा
जन जन और तन मन में
बसता प्यार और राग दुलारा

उन्नाव औ' कठुआ एक नहीं आज
प्रतिपल बेटियाँ गंवा रही है लाज
शर्म करो ये नपुंसक बलात्कारी
क्या तुम घर में ही करते होगे
अपनी बहन-बेटी पर व्यभिचार?

नजर न डालो कुत्सित, हमारे बेटियों पर
कुछ शर्म करो और झाँको अपने बहनों पर
वो भी निकलती घर से बाहर बेचारी
उसपर भी जब यही गुजरेगी
क्या हालत होगी तुम्हारी?

जो भी करता है ऐसा कभी
उसको न अपनाओ कभी
अकेला उसको रहने दो
अकेले ही उसे जीने मरने दो

जो देता साथ उसका कभी
वो भी बलात्कारी है
समाज व देश का
वो भी अत्याचारी है

ऐ खुदा! कभी न माफ करना
उसको एकदम
उसने तेरे कदमों को बदनाम किया हरदम
ठान लें अपने अपने मन में हम
सभी के बहन-बेटी को अपना कहेंगे हम

भारत को सोने और तहजीब की चिड़िया रहने दो
हम भाई-बहन हैं, एक धागे में बंधे, रहने दो
तेरी बेटी मेरी बेटी कहने में
गौरव महसूस करो
सबकी इज्जत है प्यारी, सबका सम्मान करो।





विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

हमारी जरूरत और चाहत

जब हम इस संसार में आते हैं तो सबसे पहली जरूरत हमारे माता-पिता का सहयोग और साथ का होता है। उनके प्यार और स्नेह से हमारी जीवन की शुरुआत होती है, उस समय हमारी कोई इच्छा या चाहत नहीं रहती है। हमारी हर जरूरत को वह अपना कर्तव्य और धर्म समझकर पूरा करते हैं ताकि हमें एक अच्छी और खुशहाल जिन्दगी मिल सके। इस अवस्था में हम एक-दूसरे की जरूरत होते हैं। माता-पिता के सहयोग, समर्पण के बिना हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते और अगर होगा भी तो काफी परेशानी और दर्द भरा होगा। फिर भी किसी न किसी सहारे की जरूरत अवश्य ही होगी। माता-पिता का स्नेह, समर्पण, प्यार, अविस्मरणीय तथा अलौकिक है, उसका कोई मूल्य नहीं है वह अमूल्य है। जब हमारा जीवन कुछ आगे बढ़ता है तो कुछ दूरियाँ बनना शुरू होती हैं और इच्छा का जन्म होता है। बचपन में माता-पिता के अलावे कुछ अन्य लोगों से सम्पर्क बनता है और वह चाहत भी होता है। कुछ इस सांसारिक वस्तुओं की जरूरत होती है जिसके साथ समय बितता है और हमें खुशी मिलती है। सफर कुछ आगे बढ़ता है हमारी जिन्दगी में स्कूल, कॉलेज, पढ़ाई, समाज सब जुड़ जाते हैं। कई दोस्त भी जुड़ जाते हैं जिन्दगी आगे बढ़ती जाती है। हमारी इच्छा बढ़ती जाती है कभी किसी वस्तु की तो कभी संसाधन की। हमें एक बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि जिसने मुझे जीवन दिया अपना तन-मन-धन से जोड़ दिया कभी उसे हमारे कर्मों से हमारी चाहतों या इच्छा से तकलीफ न पहुँचे बल्कि हमेशा खुशी मिले और हमें जीवन देने को हमेशा आनंद की अनुभूति हो। जीवन आगे बढ़ता है नयी इच्छा का जन्म होता है कैरियर के रूप में। इसमें दो बातें सामने आती हैं एक तो हमारी इच्छा

माता-पिता की इच्छा के अनुकूल हो जिसमें उसके सपने पूरे होने की हमसे अभिलाषा हो। वह व्यक्त कभी करता है कभी नहीं करता है। परन्तु हमें दिल से उन्हें जोड़ने की वजह से कुछ अनुभूति अवश्य ही प्राप्त होता है कि हमारी इच्छा उसके अनुकूल है या विपरीत। अगर अनुकूल है तो दोनों को ही खुशी, हिम्मत और हौसला मिलता है। दोनों के सपने पूरे होते हुए दिखाई देते हैं। माता-पिता का पूरा आशीर्वाद और सहयोग मिलता है जिससे हमारा मेहनत रंग लाता है और हम सफल हो जाते हैं। चारों तरफ घर-परिवार, नाते-रिश्ते, दोस्तों में खुशी का माहौल बन जाता है। हम अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ जाते हैं। मगर हमारी इच्छा/चाहत कुछ ऐसी है जो माता-पिता के अनुकूल नहीं है तो वे काफी मायूस और दुःखी हो जाते हैं। अन्त में हमारे साथ सामंजस्य कर लेते हैं कि बच्चे की खुशी में ही हमारी खुशी है। साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं, ऐसी स्थिति में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है लेकिन हमारी मजबूरी हमारी चाहत है जिसके साथ हम सामंजस्य नहीं कर पाते हैं। जिन्दगी जब आगे बढ़ती है तो जरूरत जीवनसाथी का होता है जिसे माता-पिता भी समझते हैं। आधुनिक परिवेश में फिर नई चाहत। इच्छा जन्म लेती है जो हमारी इच्छा के अनुकूल हो जो कि माता-पिता के अनुकूल है तो एक खुशी का माहौल बन जाता है। चारों तरफ खुशियाँ नजर आती हैं। दोनों घर परिवार खुशी से मिलते हैं और नये रिश्ते कायम हो जाते हैं। अगर इसके विपरीत हमारी चाहत माता-पिता के विपरीत हो तो फिर माहौल खराब हो जाता है। चारों तरफ परेशानियाँ, मुश्किलें शुरू हो जाती हैं जो अपना है वह पराये बन जाते हैं तथा जो अपने नहीं हैं वे अपने बन जाते हैं और अपनी उन्हीं इच्छाओं में ही खुशियाँ नजर

आने लगती है। दूसरों का दुःख, दर्द, परेशानी न तो दिखाई देती है ना ही समझ में आती है। अपने जीवनसाथी में ही सब खुशी, सुख दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि आँख रहते हम अंधे हो गये हैं। जिन्होंने अपना सबकुछ न्यौछावर किया अपना दुःख भूलकर हमें खुशी दी आगे बढ़ना सिखाया, हम उन्हें भी नजर अंदाज कर देते हैं ऐसा प्रतीत होने लगता है कि हमें उसकी जरूरत नहीं है। हमारी इच्छा ही हमारी जरूरत बनकर आगे बढ़ जाती है। हालात काफी उलझा-सा लगने लगता है। जब हमारी जरूरतों को पूरा करने वाले हमें हर

खुशी देने वाले हमारी चाहत जो उनके विपरीत है, उनके हर अरमानों पर पानी फेर देती है। जब माता-पिता को हमारी जरूरत होती है तो हम अपनी इच्छा/चाहतों की वजह से उनसे इतने दूर हो जाते हैं कि वे बिल्कुल अकेले और बेसहारा हो जाते हैं। जब तक हमें समझ में आता है अपनी भूल, गलती का एहसास होता है तब तक काफी देर हो चुकी होती है। बहुत कुछ बदल जाता है। हम वह अमूल्य निधि खो देते हैं जिसका कोई मोल नहीं है।



प्रशासनिक वाक्यांश

May be informed	सूचित किया जाय
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
May be permitted	अनुमति दी जाए
May be Sanctioned	संस्वीकृत किया जाय
May be treated us Urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए



शिव शरण सिन्हा
पूर्व संपादक 'प्रहरी'

छोटा किन्तु शक्तिशाली

मैं
समाना चाहता हूँ
तुम्हारी आँखों में
क्यों ?
क्योंकि वहाँ दरिया है
और जहाँ दरिया है
वहीं रवानगी है
और मैं
उसमें डूबना चाहता हूँ
क्यों ?
क्योंकि उसमें जादू है
और
तुम जादूगरनी।
मगर कैसे ?
बैताल की तरह
मैं समाना चाहता हूँ
तुम्हारे दिल में
क्यों ?
क्योंकि वहाँ प्रेम है, मोहब्बत है,
और
जीने का जज्बा
मगर कैसे ?
तुम्हारे रोम रोम में समाकर
उतर जाऊँगा तुम्हारे भीतर
हवा की तरह
लेकिन



मैं ये नहीं चाहती
हाँ मैं चाहती हूँ
कि
तुम समा जाओ
मेरे भीतर
एक बीज की तरह
छोटा और शक्तिशाली बीज
जो फाड़ देता है
धरती का सीना
और
निकल आता है बाहर
आकाश की ओर
सर उठाए
छा जाता है
धरती के
विस्तृत पटल पर
अपने अस्तित्व के
बुलंदियों के साथ
हाँ
मैं चाहती हूँ
तुम समाँ जाओ
मेरे भीतर
एक बीज की तरह।

हमारा कोलकाता



मनीष कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक

बंगाल की खाड़ी के शीर्ष तट से 180 किलोमीटर दूर हुगली नदी के बायें किनारे पर स्थित कोलकाता पश्चिम बंगाल की राजधानी है। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा महानगर तथा पाँचवा सबसे बड़ा बन्दरगाह है। इस शहर का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इसके आधुनिक स्वरूप का विकास अंग्रेजों एवं फ्रांस के उपनिवेशवाद के इतिहास से जुड़ा है। आज का कोलकाता आधुनिक भारत के इतिहास की कई गाथाएँ अपने आप में समेटे हुए है। शहर को जहाँ भारत के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रारम्भिक केन्द्र बिन्दु के रूप में पहचान मिली है वहीं दूसरी ओर इसे भारत में साम्यवाद आंदोलन के गढ़ के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। महलों के इस शहर को 'सिटी ऑफ ज्वॉय' के नाम से भी जाना जाता है।

अपनी उत्तम अवस्थिति के कारण इसे 'पूर्वी भारत का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है। यह रेलमार्गों, वायुमार्गों तथा सड़क मार्गों द्वारा देश के विभिन्न भागों से जुड़ा हुआ है। यह यातायात का प्रमुख केन्द्र, विस्तृत बाजार वितरण केन्द्र, शिक्षा का केन्द्र, औद्योगिक केन्द्र तथा व्यापार का केन्द्र है। पूर्वांचल एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष का प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में कोलकाता का महत्त्व अधिक है।

आधिकारिक रूप से इस शहर का नाम कोलकाता 1 जनवरी, 2001 को रखा गया। इसका पूर्व नाम अंग्रेजी में "कैलकटा" था लेकिन बांग्ला भाषी इसे सदा कोलकाता या कोलिकाता के नाम से ही जानते हैं एवं हिन्दी भाषी समुदाय में यह 'कलकत्ता' के नाम से जाना जाता रहा है। सम्राट अकबर के चुंगी दस्तावेजों और पंद्रहवीं सदी के विप्रदास की कविताओं में इस नाम का बार-बार उल्लेख मिलता है। इसके नाम की उत्पत्ति के बारे में कई तरह की कहानियाँ मशहूर हैं। सबसे लोकप्रिय कहानी के अनुसार हिंदुओं की देवी काली के

नाम से इस शहर के नाम की उत्पत्ति है। इस शहर के अस्तित्व का उल्लेख व्यापारिक बंदरगाह के रूप में चीन के प्राचीन यात्रियों के यात्रा वृत्तांत और फारसी व्यापारियों के दस्तावेजों में मिलता है। महाभारत में भी बंगाल के कुछ राजाओं का नाम है जो कौरव सेना की तरफ से युद्ध में शामिल हुए थे। नाम की कहानी और विवाद चाहे जो भी हो इतना तो तय है कि यह आधुनिक भारत के शहरों में सबसे पहले बसने वाले शहरों में से एक है।

1690 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी "जॉब चारनॉक" ने अपने कंपनी के व्यापारियों के लिये एक बस्ती बसाई थी। 1698 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक स्थानीय जमींदार परिवार सावर्ण रायचौधुरी से तीन गाँव (सुतानुटि, कोलकाता और गोबिंदपुर) इजारा लिये। अगले साल ही कंपनी ने इन तीन गाँवों का विकास प्रेसिडेंसी सिटी के रूप में करना शुरू किया। 1727 ई. में इंग्लैंड के राजा जॉर्ज द्वितीय के आदेशानुसार यहाँ एक नागरिक न्यायालय की स्थापना की गयी। कोलकाता नगर निगम की स्थापना की गयी और पहले मेयर का चुनाव हुआ। बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने 1756 ई. में कलकत्ता पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। उसने इसका नाम 'अलीनगर' रखा। लेकिन साल भर के अंदर ही सिराजुद्दौला की पकड़ यहाँ ढीली पड़ गयी और अंग्रेजों का इस पर पुनः अधिकार हो गया। वारेन हेस्टिंग्स ने 1772 ई. में इसे ब्रिटिश शासकों की भारतीय राजधानी बना दिया। कुछ इतिहासकार इस शहर की एक बड़े शहर के रूप में स्थापना की शुरुआत 1698 ई. में फोर्ट विलियम की स्थापना से जोड़ कर देखते हैं। सन् 1757 के बाद से इस शहर पर पूरी तरह अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया और सन् 1850 के बाद से इस शहर का तेजी से औद्योगिक विकास होना शुरू हुआ। सन् 1912 तक यह भारत में अंग्रेजों की राजधानी बना रहा।

ऐतिहासिक रूप से यह शहर भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के हर चरण में केन्द्रीय भूमिका में रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ-साथ कई राजनैतिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों जैसे 'हिन्दू मेला' और 'क्रांतिकारी संगठन' 'युगांतर', 'अनुशीलन' इत्यादि की स्थापना का गौरव इस शहर को हासिल है। प्रारंभिक राष्ट्रवादी व्यक्तित्वों में अरविंद घोष, इंदिरा देवी चौधरानी, विपिनचंद्र पाल का नाम प्रमुख है। वहीं आरंभिक राष्ट्रवादियों के प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु बने - रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष बने - श्री व्योमेश चंद्र बैनर्जी और स्वराज की वकालत करने वाले पहले व्यक्ति श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी भी कोलकाता से ही थे। 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में बांग्ला साहित्यकार बंकिमचंद्र चटर्जी ने बांग्ला राष्ट्रवादियों को बहुत प्रभावित किया। इन्हीं की पुस्तक 'आनंदमठ' में लिखा गीत 'वन्दे मातरम्' आज भारत का राष्ट्र गीत है। भारतवर्ष की स्वाधीनता के लिए सुभाषचंद्र बोस का बलिदान भी अविस्मरणीय है। उन्होंने इसी भूमि से भारतवर्ष की स्वाधीनता के लिए स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत की थी और आजाद हिंद फौज का गठन कर अंग्रेजों का सामना किया। कोलकाता रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महाकवि की जन्मस्थली भी रही है जिन्हें 1913 ई. में अपनी रचना 'गीतांजलि' के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। इसके अलावा स्वाधीनता के सैकड़ों सिपाही विभिन्न रूपों में इस शहर में मौजूद रहे हैं।

ब्रिटिश शासन के दौरान जब कलकत्ता एकीकृत भारत की राजधानी था, इसे लंदन के बाद ब्रिटिश साम्राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर जाना जाता था। इस शहर की पहचान **महलों का शहर, पूरब का मोती** इत्यादि के रूप में की जाती थी। इसी दौरान बंगाल और खासकर कोलकाता में बाबू संस्कृति का विकास हुआ जो ब्रिटिश उदारवाद और बंगाली समाज के आंतरिक उथल-पुथल का नतीजा था।

कोलकाता को लंबे समय से अपने साहित्यिक, क्रांतिकारी और कलात्मक धरोहरों के लिए जाना जाता है। भारत की पूर्व राजधानी रहने से यह स्थान आधुनिक भारत की साहित्यिक और कलात्मक सोच का जन्मस्थान बना।

कोलकातावासियों के मानस पटल पर सदा से ही कला और साहित्य के लिए विशेष स्थान रहा है। नई प्रतिभा को सदा प्रोत्साहन देने की क्षमता ने इस शहर को **अत्यधिक सृजनात्मक ऊर्जा का शहर** (सिटी ऑफ फ्यूरियस क्रियेटिव एनर्जी) बना दिया है। इन कारणों से ही इसे कभी-कभी भारत की सांस्कृतिक राजधानी भी कह दिया जाता है, जो कि अतिशयोक्ति न होगी।

कोलकाता में बहुत सी इमारतें गोथिक, बरोन, रोमन और इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली की हैं। ब्रिटिश काल की कई इमारतें अच्छी तरह से संरक्षित हैं जो अब धरोहर घोषित कर दी गई हैं, जबकि बहुत सी इमारतें ध्वंस के कगार पर भी हैं। 1814 ई. में बना भारतीय संग्रहालय एशिया का प्राचीनतम संग्रहालय है। यहाँ भारतीय इतिहास, प्राकृतिक इतिहास और भारतीय कला का विशाल और अद्भुत संग्रह है। विक्टोरिया मेमोरियल कोलकाता का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। यहाँ के संग्रहालय में शहर का इतिहास अभिलेखित है। यहाँ का भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय भारत का एक मुख्य और बड़ा पुस्तकालय है। फाइन आर्ट्स अकादमी और कई अन्य कला दीर्घा नियमित रूप से कला-प्रदर्शनियाँ आयोजित करती रहती हैं।

दुर्गा पूजा (दस दिवसीय त्योहार) कोलकाता का सबसे महत्वपूर्ण और चकाचौंध वाला उत्सव है। यह त्यौहार प्रायः सितंबर-अक्टूबर के माह में आता है। अन्य उल्लेखनीय त्योहारों में जगद्धात्री पूजा, पोइला बैसाख, सरस्वती पूजा, रथ यात्रा, पौष पौर्णमी, दिवाली, होली, क्रिसमस, ईद आदि यहाँ बड़े ही धूमधाम से मनाए जाते हैं। सांस्कृतिक उत्सवों में कोलकाता पुस्तक मेला, कोलकाता फिल्मोत्सव, डोवर लेन संगीत उत्सव और नेशनल थियेटर फेस्टिवल आते हैं।

इस नगर में भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत को भी सराहा जाता रहा है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी से ही बंगाली साहित्य का आधुनिकीकरण हो चुका है। यह आधुनिक साहित्यकारों की रचनाओं में झलकता है, जैसे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, माइकल मधुसूदन दत्त, रवींद्रनाथ ठाकुर, काजी नजरुल इस्लाम और शरतचंद्र चट्टोपाध्याय आदि। इन साहित्यकारों द्वारा तय की गयी उच्च श्रेणी की

साहित्यिक परंपरा को जीबनानंददास, बिभूतिभूषण बंधोपाध्याय, उमाशंकर बंदोपाध्याय, माणिक बंदोपाध्याय, आशापूर्णा देवी, शिशिरेन्दु मुखोपाध्याय, बुद्धदेव गुहा, महाश्वेता देवी, विनय मजुमदार, संजीव चट्टोपाध्याय और सुनील गंगोपाध्याय ने आगे बढ़ाया है।

मैदान और फोर्ट विलियम हुगली नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित सबसे बड़ा पार्क है। यह 3 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला है। चूंकि इसे अब भारतीय सेना के लिए उपयोग में लाया जाता है, यहाँ प्रवेश करने के लिए विशेष अनुमति लेनी पड़ती है। ईडन गार्डन्स में एक छोटे से तालाब में बर्मा का पेगोडा स्थापित किया गया है, जो इस गार्डन का विशेष आकर्षण है। यह स्थान स्थानीय जनता में भी लोकप्रिय है। विक्टोरिया मेमोरियल 1906-21 ई. के बीच निर्मित, ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया को समर्पित है। इस स्मारक में शिल्पकला का सुंदर मिश्रण है। इसके मुगल शैली के गुंबदों में सारसेनिक और पुनर्जागरण काल की शैलियाँ दिखाई पड़ती हैं। मेमोरियल में एक शानदार संग्रहालय है, जहाँ रानी के पियानो और स्टडी-डेस्क सहित 3000 से अधिक वस्तुएँ प्रदर्शित की गई हैं। सेंट पॉल कैथेड्रल चर्च शिल्पकला का अनूठा उदाहरण है। इसकी रंगीन काँच की खिड़कियाँ, भित्तिचित्र, ग्रांड-ऑल्टर, एक गाँथिक टावर दर्शनीय हैं। हावड़ा में स्थित बेलूर मठ रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है, इसकी स्थापना 1899 ई. में स्वामी विवेकानंद ने की थी, जो रामकृष्ण के शिष्य थे। यहाँ 1938 ई. में बना मंदिर हिंदू, मुस्लिम और इसाई शैलियों का मिश्रण है। दक्षिणेश्वर काली मंदिर हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित माँ काली का मंदिर है। यही वह स्थान है जहाँ माँ काली ने श्री रामकृष्ण परमहंस को दर्शन दिये और उन्हें दैवीय आध्यात्मिकता प्राप्त हुई और

उन्हें सभी धर्मों में एकता लाने की अनुभूति हुई।

मदर टेरेसा के बिना कोलकाता की चर्चा भी बेमानी है क्योंकि मेसिडोनिया से आकर उन्होंने इसे अपना घर बना लिया और अपना सारा जीवन गरीबों, अनाथों और असहायों की सेवा में लगा दिया। यहाँ उन्होंने सन् 1950 में मिशनरी चैरिटी की स्थापना की। उन्हें सन् 1962 में रमन मैग्सेसे शांति पुरस्कार और सन् 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मरणोपरान्त सन् 2016 में उन्हें संत टेरेसा की उपाधि मिली। मदर टेरेसा होम्स की यात्रा आपकी कोलकाता यात्रा को एक नया आयाम देगी। काली मंदिर के निकट स्थित यह स्थान सैकड़ों बेघरों और 'गरीबों में से भी गरीब लोगों' का घर है - जो मदर टेरेसा को उद्धृत करता है।

सन् 1943 ई. में निर्मित कोलकाता और हावड़ा शहर को जोड़ने वाले हावड़ा पुल को विश्व का छठा सबसे लम्बा ब्रैकेट ब्रिज माना जाता है। बिना किसी नट-बोल्ट की सहायता से निर्मित यह पुल एक अद्वितीय संरचना है। 14 जून 1965 को महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम पर इसका नाम बदलकर रवीन्द्र सेतु रखा गया था पर अभी भी यह हावड़ा ब्रिज के नाम से अधिक विख्यात है।

बोटानिकल गार्डन्स कई एकड़ में फैली हरियाली, पौधों की दुर्लभ प्रजातियाँ, खिले फूल, सुंदर शांत वातावरण यहाँ प्रकृति के साथ शाम गुजारने का एक सही मौका है। नदी के पश्चिमी ओर स्थित इस गार्डन में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बरगद का पेड़ है, जो 10,000 वर्ग मीटर में फैला है, इसकी लगभग 420 शाखाएँ हैं। इसके अतिरिक्त अजायबघर, चिड़ियाखाना, बिरला तारामंडल, कालीघाट, विज्ञान नगरी आदि मुख्य दर्शनीय स्थान हैं।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 की झलकियाँ



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 का उद्घाटन, दीप प्रज्ज्वलित कर, करते हुए
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन के अवसर पर उद्गार व्यक्त करते हुए
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन के अवसर पर
उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ. काव्यदीप जोशी, उपमहालेखाकार



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन के अवसर पर
माननीय गृहमंत्री के संदेश का वाचन करते हुए श्री शिव शंकर, उपमहालेखाकार



हीरा कुमारी

प्रकृति का प्रांगण

प्रकृति की विहँसती यह अनुपम छटा
पर्वतों से अठखेलियाँ करती श्वेत घटा
क्यारियों में खिलखिलाते नूतन प्रसून
बहती पवन और निर्झर झरनों की धुन।

शांत, स्निग्ध, मनोरम प्रकृति का यह रूप
कहीं बादलों की झुरमुट, कहीं खिलती धूप
आओ प्रकृति के बाहुपाश में आलिंगनबद्ध हो जायें
प्रकृति और परमात्मा में एकाकार हो जायें।

हरित धरा, नील गगन, प्रस्फुटित कलियों का चमन
प्रकृति का अलौकिक दृश्य कर रहा सबको मगन।
मयूरों के नृत्य के बीच कोकिल की मृदु तान
सुंदर अद्भुत दृश्यों से भरा पड़ा है यह सुंदर जहान।

द्वारा तरुण कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी





राकेश कुमार नं. 3
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

किस डे

आज कार्यालय के काम में व्यस्त था
घर से दूर अपने कार्य में मस्त था
मेरे कनीय सहकर्मी ने याद दिलाया
सर आज किस डे है
घर की याद नहीं आयी
वो क्या है, अनमना सा मैं पूछा
मुस्कुरता, शर्माता वो बोला
आज अपनी प्रेमिका को
गिफ्ट दे कर किस करते हैं
इसलिए इसे किस डे कहते हैं ...
मैं यादों में चला गया
घर में सुबह भगवान को प्रणाम कर
रेल पकड़ने जब निकला था
श्रीमती दरवाजे पर खड़ी थी
मुझे देख सहसा बोल पड़ी थी
आज कौन सा डे है
मैंने भी कहा था, आज मन्डे है
यह कहते हुए अपना बस्ता उठाया
स्टेशन की ओर दौड़ लगाया ...
सब सोचने के बाद घर पर फोन घुमाया
उधर से श्रीमती की आवाज आयी

अब क्या बात, कुछ कहना है ?
सकुचाते हुये मैं भी बोला
आज किस डे है, वो बताना था ...
श्रीमती की आवाज तलख थी
सुबह में पूछा तो याद नहीं था
मैंने भी तुरंत बोला याद तो था
पर गिफ्ट नहीं था ...
गुस्से में लाल वो बोली
कैग के ऑफिसर कहलाते हो
मोटी फाइल से घोटाले निकालते हो
अपनी पत्नी के मनोभाव को समझ ना सके
मोटी फाइलों को समझ लेते हो
पर मुझको ही ना समझ सके
तुम्हारे दोनों गिफ्ट उस वक्त
मेरे पल्लू को पकड़े मेरे साथ खड़े थे
अब मैं तुम्हे क्या बोलूं...
यह कह कर फोन कट हो गया
खुद को तेज तर्रार समझने वाला
एक ऑडीटर, मूर्ख पति बन
फिर इक फाइल में व्यस्त हो गया ...





के. एम. जयपुरियार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

राधा कृष्ण का प्रेम

एक दिन यमुना तट पे बैठे-बैठे
राधा जी के मन में एक ख्याल आया
क्यों न छलिये कान्हा को छकाया जाय
उसकी वंशी छुपाँ दूँ
और आज रास में मैं नही आऊँ।
गोपियाँ चल पड़ी राधा का मन रखने
कान्हा को पूरी तरह से ठगने।
दूसरों की मन की बात जानने वाला,
भला राधा की न जाने ?
ऐसा हो नहीं सकता
फिर भी राधा रानी की इच्छा डिगा भी नहीं
सकता।
स्वभाव के विपरीत शांत पड़े कान्हा के पास से
गोपियाँ वंशी चुरा लाई
और आज के रास में सभी आई पर राधा नहीं
आई।
उदास कान्हा बैठे थे वंशी वट पर,
और मुस्कुराती राधा चुप-चाप देख रही थी,
ये सब यमुना तट पर।
ये क्या?
कई पहर बीते,
पर समय अपनी जगह से नहीं हिला,
न सूरज ढला न चाँद निकला।
न गैय्या रँभाई न मैय्या बुलाई।
न पक्षियों ने किया कलरव,

न वृन्दावन में मना कोई उत्सव।
यमुनाजी की धारा मानों गई ठहर,
पता नहीं किस प्रकोप का था ये कहर।
खो गयी कहीं वंशी की मधुर तान
सभी हो गए मानो निश्चेत निष्प्राण।
तभी राधा आई और कान्हा को पुकारा,
पूछा ये कौन सा नया छल है तुम्हारा?
कान्हा ने मुस्कुराते हुए कहा, सुनो सखी
ये सब तुम्हारी परिकल्पना तो थी,
इस सृष्टि में तभी तक रंग है,
जब तक हमारा तुम्हारा संग है।
संसार के ये नौ रंग और सोलह कलाएँ
सभी तेरे मेरे प्रेम की अलग अलग है विधाएँ।
राधा ने पुनः पूछा कि,
ये संग कब तक होगा,
कभी न कभी तो हमें विरह सहना पड़ेगा।
कृष्ण ने कहा
एक दिन मैं चला जाऊँगा
फिर वृन्दावन लौट के नहीं आऊँगा,
पर तब हमारा ये लौकिक प्रेम अलौकिक हो जाएगा,
तू मुझमें समा जाओगी और मैं तुझमें समा जाऊँगा।
फिर भी जब तक यह संसार रहेगा,
हमारा संग सदैव प्रेम की परिभाषा गढ़ेगा।



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन के अवसर पर अधिकारी एवं कर्मचारीगण



संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा 2020 के उद्घाटन के अवसर पर अधिकारी एवं कर्मचारीगण



स्वतंत्रता दिवस 2020 के अवसर पर परेड की सलामी
लेते हुए श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



स्वतंत्रता दिवस 2020 के अवसर पर झण्डोत्तोलन करते हुए
श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)